बढ़ेरां री बाताँ राजस्थनी ज्योतिष दोहा
ग्राम्यगिरा
ज्योतिष संग्रहण
संग्रहण कर्ता
पण्डित श्रीराधे जोशी "हुक्म" दुलाचासर वाले

॥ जयश्रीराम ॥

बढेरां री बाताँ राजस्थनी ज्योतिष दोहा

# ग्राम्यगिरा ज्योतिष संग्रहण

[भाग-१-२]

संग्रहण सम्पादक

पं. श्रीराधे जोशी "हुक्म"

॥ जयश्रीराम ॥

मानसी भक्ति द्वारा प्रकाशन

Dulchasar Bikaner

# ज्योतिष कवि एक परिचय

१५वीं१६वीं सदी में उत्तर भारत में ऐसे ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता हुएं हैं जिन्होंने ज्योतिष जैसे क्लिष्ट विषय को ग्राम्यभाषा में लिख कर आस्तिक जगत पर बहुधा उपकार किया है । जिनका ज्योतिष ज्ञान इतना अद्भुत था कि उनके द्वारा रचित ज्योतिष ज्ञान के दोहे आज भी प्रकृति एवं परीक्षण अक्षरशः सत्य होते हैं । ऐसे कुछ ज्योतिष कवियों के दोहों का सङ्कलन हमारे परम् पूजनीय दादाजी वैकुण्ठवासी दैवज्ञ पण्डित श्रीहजारीराम जी जोशी (भारद्वाजगौत्रीय गुर्जरगौड़ ब्राह्मण) दादाजी के (डायरी में सन्१९७१) लगभग ४५/५० वर्ष पुरानी डायरी से जीर्ण शीर्ण अवस्था में प्राप्त हुई । जिन दोहों का अर्थ सरलतापूर्वक समझा जा सकता है वह मूल रूप में लिखे हैं । हमने कुछ दोहों का अनेक प्रकार के शब्दकोष , पुस्तकों , साहित्यों के माध्यम से अर्थानुसन्धान किया हैं और साहित्य व ज्योतिष प्रेमियों के उपयोगितार्थ पुस्तक का रूप दिया है । इसमें ज्योतिष के मर्मज्ञ कवियों में -गौस्वामी तुलसीदास जी , रहिमजी , मोतीजी , डंकजी , भड्डलीजी , घाघजी ,भड्डरीजी, हनुमानजी , सहदेवजी ,एवं कुछ स्वयं रचित दोहे वर्णित है ।

आशा करता हूँ कि हमारा श्रम आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा । मानवीय अथवा उपकरण की त्रुटि या टङ्कंण दोष(टाइपिंग त्रुटि) के लिए क्षमा प्रार्थी हैं ।

## १. गोस्वामी तुलसीदासजी -

गोस्वामीजी को आज भारत में कौन नहीं जानता है । इनका जन्म चित्रकूट के राजापुर गांव में शास्त्रनिष्ठ ब्राह्मण कुल में हुआ था । आपने २४ ग्रन्थ रचे जिसमें प्रथम कृति हनुमान चालीसा एवं अंतिम कृति विनयपत्रिका हैं । आपकी विश्वपावनी अमर कृति श्रीरामचरित मानस सनातन जगत का भव उद्धारक जहाज हैं ।

## २.कवि डंक ज्योतिषाचार्य -

मारवाड़के सुप्रसिद्ध कवि पण्डित डंक भृगुकुलीय ब्राह्मण थे इनकी सन्तान इनके नाम से डाकोत व गौत्र से भार्गव कहलाए डंक के दोहे छन्द वर्षा कृषि तिथि मुहूर्त व शकुन ग्रह नक्षत्र आदि के लिए आमजन में बहुत प्रसिद्ध हैं ।

## ३.कवि भड्डली राजस्थान

पश्चिम राजस्थान के हुदाद की कन्या भड़ली शकुन की जानकार थी भड्डली पुराण भी प्रसिद्ध हैं इनकी ज्योतिष चर्चा ज्योतिषी डंक के साथ बहुत दोहों में प्राप्त होती हैं । श्रीरामनरेश जी त्रिपाठी ने भंगिन लिखा है , राजस्थान के लेखक इनको वैद्य कन्या मानते हैं । भृगुवंशी डंक ज्योतिष से विवाह होने से इनके सन्तान भार्गव , डाकोत , जोतकी आदि उपाधियों से प्रसिद्ध हैं ।

## १.सन्त चरणदास जी

सन्त चरणदास जी का प्रार्दुभाव सम्बत १७६० में राजस्थान के डहरा ग्राम में भृगुवंशी ब्राह्मण कुल में हुआ। इस कलिकाल में साक्षात् व्यासनन्दन महामुनि शुकदेवजी ने प्रगट हो कर गुरु मन्त्र उपदेश दिया आपने मात्र१४ वर्ष में ही अष्टांग योग सिद्ध कर लिया वृन्दावन में श्याम श्यामाजू के प्रत्यक्ष दर्शन किया १७ दिव्य ग्रन्थों की रचनाएं की और सं. १८३९ में योगमार्ग से ब्रह्मलीन हो गए आपकी दिल्ली में समाधि है। प्रसिद्ध भक्ता कवि सहजोबाई इनकी शिष्या थी चरणदास जी अष्टांग योग हठयोग और स्वर ज्योतिष में पारंगत थे इनका स्वर्ज्ञान वैदिक साहित्यों के अनुरूप अनुभूति गम्य हैं।

शुकदेव गुरू कृपाकरी, दियो स्वरोदय ज्ञान ॥

## २. श्रीरामचरणचार्य मिश्र

मिश्र जी ने नक्षत्र से रोग, ज्येततिष से रोगकाल ज्ञान, वेद्य का काल ज्ञान, स्वर से रोग का ज्ञान छाया पुरुष परिज्ञान आयु निर्णय आदि विषयों पर बहुत विस्तृत चर्चा की है। मेने दोहों की शुद्धि के लिए अनेकों काव्य पढ़े उनमे मिश्र जी का मूल काव्य अद्भुत है।

## ३.भक्त ईश्वरदान जी

महाकवि भक्त ईश्वरदान जी कृतियाँ अनुपम धरोहर हैं सनातन के लिए।ईसरदासजी का जन्म भादरेस ग्राम जिला बाड़मेर-राजस्थान में हुआ था अपना अधिकांश जीवन गुजरात में बिताया। इनका देवियाँण तो मानो चमत्कारी मन्त्र हैं। ज्योतिष भक्ति सौर्य नीति आदि सभी मे इनका योग दान हैं।

केहरि केस भुजंग मणि, सरणाई सुडाह।<br>
सती पयोहर क्रपण धन, पडसी हाथ मुवाह ।।

अर्थ - सिंह के केश, सर्प की मणि, वीर की शरण में आया हुआ, सती नारी के स्तन, और कंजूस का धन मरने पर ही किसी को मिल सकता हैं।

करता हरता श्री ह्रींकारी,<br>
काली कालरयण कोमारी,<br>
ससि सेखरा सिधेसर नारी,<br>
जग नीमवण जयो जडधारी॥

धवा धवळगर धव धूं धवळा,<br>
क्रसना कुबजा कचत्री कमला,<br>
चलाचला चामुण्डा चपला,<br>
विकटाविकट भू बाला विमला॥

## ज्योतिष कवि एक परिचय

**१. प्रसिद्ध कवि घाघ -**

विश्वप्रसिद्ध शास्त्र सिद्ध वर्षा कृषि पशु नीति के लिए जाने जाते हैं ज्योतिष कवि घाघ का जन्म बिहार में हुआ था (जन्मस्थान को लेकर इतिहासकार एक मत नहीं ) फिर इन्होनें अपने नाम से कन्नौज के पास सराय घाघ नामक गाँव बसाया घाघ का पूरा नाम पं देवकली दुबे घाघ था।

**२.कवि भड्डरी जोशी -**

इनकी लेखन शैली से जाना जा सकता है कि भड्डरी भड्डली से भिन्न हैं कुछ इतिहासकार कवि भड्डरी को मारवाड़ का मानते और कुछ काशी के आसपास क्षेत्र के मानते हैं। इन्होंने अपने दोहों में अपनी छाप के साथ जोशी उपाधि बार बार लिखी है सामान्यतय अर्थकर्ताओं ने जोसी का मतलब ज्योतिषी लगाया है पर जाति भास्कर ग्रन्थ के ब्राह्मण उतपत्ति खण्ड के अनुसार जो ब्राह्मण ज्योतिष शास्त्र में निष्णात थे जोशी नाम उपाधि जाने गए हैं। आपकी रचनाएं मुहूर्त ज्योतिष वर्ष कृषि अकाल महंगाई आदि के लिए प्रसिद्ध हैं।

**३. पं. राधे जोशी (हुक्म)**

मुझे ड़िंगळ पिङ्गळ में दोहे भजन चोपाई कुण्डलनी सवैया लिखने का बहुत रुचि वृन्दावन में सुर तुलसी भक्तमालादि साहित्य के अध्ययन काल से ही है। एक मेने प्रभु श्री बाँकेबिहारीजी पर कुछ लिखा तो निमवाले बाबा (सन्त थे) उन्होंने कहा पण्डित जी यह तो सरस्वती जी कृपा हैं आप पर आपको कुछ अच्छा लिखना चाहिए। महात्माजी की वाणी से प्रभावित हो कर मेने मीराबाई जी श्री राधाकृष्ण सत्संग आदि पर ५० से अधिक सवैया दोहा लिखा। भारद्वाज गौत्र की कुलकी इष्ट शक्तिदादी का जीवन चरित्र चालीसा चामुण्डा देवी की आरती आदि रचना लिखी जो पुस्तक रूप में गूगल पर भी उपस्थित हैं। पूज्य दादा जी की डायरी को देखने के बाद ज्योतिष पर दोहे लिखने का संकल्प जगा सत्प्रेरणा से प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों के श्लोकों का अक्षरशः अर्थानुरूप ग्राम्यभाषा बद्ध अनेकों दोहा चोपाई के रूप में किया है। जैसे एक श्लोक हैं

आभाका सित पो तु मैत्र श्रवण रेवती।
संगमे नैव भोक्तव्य द्वादशी द्वादशाहरेत् ॥

समानार्थी श्लोक का दोहा

अनु आषाढां भादों श्रवण , काति रेवन्ती माहिं।
हरियो वास ऊजळो , बारहाँ बरसाँ फल नसाहिं ।।

५० दोहा में से कुछ दोहे इस पुस्तक में दे रहे हैं बाकी अलग से स्वतंत्र ग्रन्थ बनना का मानस हैं। स्वरचित दोहे चोपाई इस पुस्तक के पेज नं.

श्रीकृष्णार्पणमस्तु
पं. श्रीराधे जोशी बीकानेर
बि.सं.२०७६ आषाढ़ शुदी गुरुपूर्णिमा मंगलवार
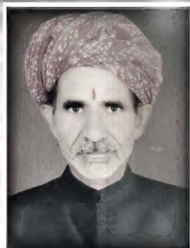
# || प्राक्कथन ||

## ❁ दो बात अपनो से ❁

विनायक विनवां सुरज साख , सद्गुरु सदा सहाय ।
जोषी कवित सम्बद्ध करूँ , सर्व कबिन्ह मनाया ।।
अर्थ - विघ्नहर्ता विनायकजी त्रिलोकी के साक्षी भगवान सूर्य को विनती करके सद्गुरु भगवान की सहायता से ज्योतिष की कविताओं को सभी कवियों को मना कर ग्रन्थ रूप बद्ध करता हूँ ।

पूज्य दादाजी की डायरी इतनी जीर्ण शीर्ण हो चुकी है कि सब दोहो को ना तो समझा जा सकता है और ना ही लिखा जा सकता है फिर भी जितना हो सका कई साहित्यों के सहयोग से प्रयास दोहों को समझने में अभी भी बहुत पड़े हैं जो धुंधले हो चुके हैं । इस पुस्तक के सङ्ग्रहण में विविध क्षेत्रों के कुछ बुजुर्ग पण्डितो से पुराने ज्योतिष के दोहे मिले जिनकी पाठ शुद्धि करने में पं श्रीरामनरेश जी त्रिपाठी का काव्य ग्रन्थ बहुत सहयोगी हुआ । बुजुर्गों की बातों से प्राप्त लोकोक्ति दोहे भी ज्योतिष प्रेमियों के लिए अंकित किए गए है । विशेष - मेरे स्वरचित दोहे भी मूल ज्योतिष ग्रन्थों का श्लोकार्थ ही ग्राम्यगिरा में काव्य शैली से रचनात्मक करने का प्रयत्न किया है । आशा करता हूँ आपके लिए पुस्तक सार्थक सिद्ध होंगी ।

आप सभी की मङ्गलकामनाओं के साथ राम राम सा ।

नम: पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नम: ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नम: ।।

।। श्रीसीताराम ।।

|| सङ्ग्रह सम्पादक ||
पं श्रीराधे जोशी दुलचासर बीकानेर [राज.]

## मंगलाचरण

सूरज चंदा भौम बुध, गुरु शुक्र शनि देव ।
सब ही जान किरपा करो नित उठ करता सेव ।।
राहु केतु किरपा करो धरहु आपरो ध्यान ।
भैरु चौसठ योगिनी पीर वीर हनुमान ।।
जती सती और सूरमा अरु बस्ती का देव ।
मनसा पूर्ण कीजिये रती न आवे खेव ।।

अर्थ- हे सुर्यादि देव आप सब कृपा कीजिए मै आपकी नित्य आराधना करता हूँ । राहु केतु और भैरवनाथ सहित चौसठ योगिनी पीर (हिन्दुओ में पंच पीर हैं) वीर देव हनुमानजी कृपा कीजिए मैं आपका ध्यान करता हूँ । यति , सती देवियां , राष्ट्र वीर , और ग्रामदेवता इच्छा पुर्ण करो कष्ट दूर हो ।

## तिथि नाम

एकम छठ एकादशी या नंदा तिथि जाण ।
दूज सातम द्वादशी भद्रा लीजै मान ।।
तीज आठ्यूँ त्रयोदशी जया तिथि है तीन ।
चौदस नौमी चतुर्थी रिक्त तिथि प्रवीन ।।
दसवीं पुण्यं पंचमी मावस पूरण होय ।
'मोती' सोधि विचार कर कारज करियो कोय ।।

अर्थ- १-६-११ यह नन्दा तिथि जाने , २-७-१२ भद्रा तिथि मानी गई हैं , ३-८-१३ जय तिथि तीन हैं ,४-९-१४ रिक्ता तिथि प्रबुध्द लोग कहते हैं , ५-१०-१५-३० यह चार पूर्णा तिथि हैं । मोती कहते हैं- तिथि की शुद्धि विचार करने के बाद कार्य करें ।

## मासिक अबूझ मुहूर्त

पूनम कि पड़वा भली, अमावस री बीज ।
अण बूझ्या मुहूर्त भला, कै तेरस कै तीज ।।

अर्थ- पूर्णिमान्त प्रतिपदा, त्रयोदशी तृतीया तथा अमावस्या के पश्चात शुक्ला द्वितीया - यह दिन अबुझ मुहूर्त होते है और इन दिनों में जो भी कार्य शुरू किया जाता है, उनमे सफलता मिलती है ।

## दिशाशूल

सोम शनीचर पूरब न चालू। मंगल बुध उत्तर दिश कालू ।।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय.पथ सुख न पाय ।।
बीफे दक्षिण करे पयाना। फिर नहिं समझो ताको आना ।।

अथवा

पूरब सोम शनैशर वासो, दक्षिण गुरु एकलो निवासो ।
भौम और बुध उत्तर जानो, शुक्र-रवि पश्चिम ठानो ।।
अर्थ- सोमवार शनिवार को पूर्व दिशा कि यात्रा, गुरुवार को दक्षिण दिशा कि यात्रा , मंगलवार और बुधवार को उत्तर दिशा एवं, शुक्र रविवार को पश्चिम दिशा कि यात्रा नेष्टकारी हैं दिशा में शूल होता है ।

### दिशाशूल परिहार

घी खयार इतवार ने, सोमवार पय शुद्ध ।
गुड़ खाय मंगलवार ने, तिल खाय रे बुध ।।
दही खायर गुरु ने, अरु शुक्रवार जौ खाय ।
उड़द खयार शनि चलो शूल दोष मिट जाय ।।
अर्थ-विशेष परिस्थिति में दिशाशूल परिहार में कवि कहता है रवि को घी पीकर , सोम को दूध , गुड़ खा कर मंगल को, तिल खा के बुध को, दही पीकर गुरु को, शुक्र को जौ और उड़द खाकर शनिवार के दिन यात्रा करने शूल दोष मिट जाता हैं।

रवि को पान, सोम को दर्पण, मंगल गुड़ करिए अर्पण ।
बुद्ध को धनिया, बिफै जीरा, शुक्र कहे मोहे दधि का पीरा।।
कहे शनि में अदरख पावा, सुख संपति निश्चय घर लावा।।
अर्थ-रवि को पान खाकर, सोम को दर्पण में मुख दर्शन , मंगल को गुड़ खाकर , बुध को धनिया खाकर, गुरु को जीरा खाकर , शुक्र को दही पीकर और शनिवार को अदरख खाकर
के यात्रा करने से शुलदोष मिट सुख सम्पति मिले ।

### यात्रा शकुन

भैंसा खर लड़ता मग माही। स्वान बिलाई द्वन्द मचाई ।।
विधवा नारी उबासी लैवे । कुत्तो कान फड़फड़ी देवे ।।
रोगी रीछ सवार सदाई । दाएं-बाएं हैं दुखदाई ।।
इकली हिरणी दूजो स्यालो । भैसं चढ्यो मत मिलजो ग्वालो ।।
तीन कोस तक मिल जावे तेली। निश्चय मौत शीश पर खेली ।।
सुका लक्कड़ दूध अंगारा। सुने माथे विप्र भिखारा ।।
अर्थ- यात्रा प्रारम्भ काल में भैंसा या गधा लड़ रहे हो, कुत्ता और बिल्ली के रूदन का स्वर करे , विधवा नारी उबासी लेती दिखे , कुत्ता कानो को फड़फड़ा रहा हो , रोगी और भालू का मिलना , अकेली हिरणी लोमड़ी और भैंस चढ़ा ग्वाला मिलना अशकुन हैं , अगर ३ कोस तक तेली मिले तो मृत्यु सामान कष्ट कहा गया है सुखी लकडी भरा वाहन दूध अग्नि और बिना तिलक ब्राह्मण इन सभी का सामने पड़ना अथवा दिखाई देना अशुभ शकुन है ।

## चन्द्र वास

मेष सिंह धनु पूरब करइ चन्द्रमा वास ।
कन्या वृषभ मकर में दक्षिण करइ निवास ||
तुला कुम्भ मिथुनादिक पश्चिम जानै जोग ।
वृश्चिक कर्क मीन में उतर कहइ सब लोग ||

अर्थ- मेष सिंह धनु पूर्व में , कन्या वृषभ मकर दक्षिण में ,तुला कुम्भ मिथुन पश्चिम में , वृश्चिक कर्क मीन राशि के चन्द्रमा का उत्तर दिशा में वास होता हैं ।

## चन्द्र फल

सन्मुख होइ जो चन्द्रमा सम्पति देइ अपार ।
दक्षिण में सुख सम्पदा का होता बिस्तार ||
पीछे से अति कष्ट दे बाये से धन नाश |
सन्मुख सब बिधि होत है यात्रा क्लेश विनाश ||

सन्मुख चन्द्र अर्थ लाभ करे , दक्षिण में सुख करें , पीछे मृत्यु कारक कष्ट , बाएं हाथ में धन नाश करे सन्मुख चन्द्र से यात्रा दोष मिट जाता हैं ।

## यात्रा विचार

दिशाशूल ले जाओ बामे, राहु योगिनी पुट ।
सन्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लक्ष्मी लूट ।।

अर्थ- दिशाशूल बाएं हाथ , राहु योगनी को पीठ दिखा कर सन्मुख चन्द्र में यात्रा करने अपार लक्ष्मी मिले ।

(नोट- आगे विशेष यात्रा विषय वर्णन करेंगें)

## मृत्युयोग

उषा सोम दिति अनुराधा, बुधाश्वानि गुरु ने मृगसिर ।
भौम शतभिषा मौत जोग है, शुक्रा अषलेखा हस्त शनिचर ।।

अर्थ- सोमवार को उत्तराषाढ़ा , रवि को अनुराधा , बुध को अश्वनी , गुरु को मृगशिरा, मंगल को शतभिषा , शुक्र को अश्लेषा और शनिवार को हस्त नक्षत्र हो तो मृत्युयोग बनता है यह शुभ कार्य वर्जित हैं ।

## अमृतसिद्धि योग

रवि ने हस्त पुख हो गुरु ने बुध अनुराधा अश्वनी भौम । अमृतसिद्धि
रेवती भृगु ने मंद रोहिणी मृगसिर सोम ।।

अर्थ- रवि को हस्त, गुरु को पुष्य, बुध को अनुराधा, मंगल को अश्वनी, शुक्र को रेवती, शनि को रोहिणी और सोमवार के दिन मृगशिरा नक्षत्र हो तो अमृतसिद्धि योग होता हैं । जिसमे सब कार्य सीघ्र सिद्ध होवे ।

पड़वा मूळ पांचम भरणी । आठम कृतिका नौमी रोहिणी ।।
दशमी असलेखा सुन लो भैया। ये योग ज्वालामुखी कहिया ।।
जन्मै तो जीवे नहीं. बसै तो ऊजड़ होय ॥
नारी पहरे चुड़लो , निश्चय विधवा होय ॥
कुवें नीर झांके नहीं, खाट पडो न उठन्त ।
बोवाई कटे नहीं , ज्योतिष कहता ग्रंथ ॥

अर्थ-प्रतिपदा में मूल , पंचमी में भरणी, अष्टमी को कृतिका, नौमी को रोहणी, दशमी को अश्लेषा, नक्षत्र ज्वालामुखी (अग्निमुखी) होते हैं। इनमें जन्मा जीवे नहीं और घर में बसे तो उजड़े जावे स्त्री चूड़ी पहने तो विधवा हो (कुछ कवि विवाह निषेध करते हैं) , कुआ खुदे तो पानी न मिले बीमार हो तो उठे नहीं और खेत बीजे तो कटे नहीं ऐसा जोतिष के ग्रन्थ कहते है।

(ज्वालामुखी शांति - नक्षत्र के स्वामी वह तिथि के स्वामी की विहित धातु की मूर्ति बनाकर पर पञ्चकलश स्थापनपूर्वक नक्षत्र शान्ति करने से दोष कम होता हैं।)

### गण्डमूल

मघा अश्वनी रेवती अश्लेखा ज्येष्ठा मूल ।
षड नक्षत्र है मूल के जन्मत दे अति शूल ||

अर्थ- मघा अश्विनी रेवन्ती अश्लेषा ज्येष्ठा और मूल छ नक्षत्र गण्ड है जो जन्म से शूल सदृश्य कष्टकारी हैं ।

### गण्डान्त भेद

आश्लेखा जेष्ठा मूल की संज्ञा है अतिगण्ड।
मघा अश्वनी रेवती को कहते उपगण्ड ।।

अर्थ- अश्लेषा ज्येष्ठा मूल की अतिगण्ड संज्ञा हैं और मघा अश्विनी रेवन्ती उपगण्ड नक्षत्र हैं ।

### गण्डान्त चरण फल

मूल अंतिम अन्त मघा द्वैय। घटी कहावै अभुक्त मूलमय ।।
चरण अश्वनी प्रथम जन्म हो। पिता कष्ट या पिता मरण हो ।।
दूसर तीसर चतुर्थ चरणा । सब सुख होय सर्व दुःख हरणा ।।
ज्येष्ठा पूर्ण अरिष्ट बखाना । सकल कुटुम्ब कष्टमय माना ।।
रेवति तीनि चरण सुखकारी । अंतिम चरण सर्व सुखहारी ।।
आलेखा प्रथम चरण नहिं दोषा। अंतिम चरण हानि अरु रोषा ।।
तीसर मातृ कष्टमय माना। चतुर्थ पिता अरिष्ट बखाना ।।

अर्थ- मूल की अंतिम और मघा के अन्त दो चरण अभुक्त सुखद हैं । अश्विनी का प्रथम चरण पिता को मृत्यु तुल्य कष्ट देता हैं १-२-३ चरण सुखद हैं । ज्येष्ठा पूरा कष्ट कारक हैं ।रेवन्ती के तीन चरण सुखद एवं अंतिम चरण कष्ट कारक हैं । अश्लेषा प्रथम चरण में दोष नहीं है बाकी धन माता पिता के लिए अनिष्टकारी हैं ।

## पंचक ज्ञान

अर्ध धनिष्ठा शतभिषा द्वै भाद्रपद प्रमान ।
रेवति साढ़े चार की पंचक संज्ञा मान ||
दक्षिण दिशि यात्रा, नहिं करना शवदाह ।
छत चारपाई काष्ठ का, रोको कार्य प्रवाह ||

अर्थ - अर्द्ध धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद उत्तरभाद्रपद और रेवन्ती सहित साढ़े चार नक्षत्र की पंचक संज्ञा हैं । इनमें दक्षिण दिशा की यात्रा , शवदाह , छत डालना , लकड़ी घास इकट्ठा करना निषेध है ।

## हवनाग्नि वास

शुक्ल पक्ष प्रतिपदा प्रमाना। तिथि कर क्रम से करइ विधाना ।।
वर्तमान तिथि तक गिनी जावै। पुनि संख्या में एक मिलावै ।।
सूर्यवार से दिन कर गिनती। सबका जोडि करइ पुनि बिनती ।।
जो संख्या जोड़े मिलि जाई। पुनःचार से भाग कराई ।।
तीनी बचै तौ प्रथ्वि निवासा । सब विधि शुभ पृथ्वी हुतवासा ।।
जो बच एक स्वर्ग में जानौ। प्राणनाश की ज्वाला मानौ

अर्थ- शुक्ल प्रतिपदा से तिथि क्रम गिनने का विधान करें । वर्तमान तिथि तक गिनकर एक मिलावे रविवार से दिन गिनकर सबको जोड़ें प्राप्त सङ्ख्या में चार भाग दे शेष तीन बचे तो पृथ्वी पर वास है जो यज्ञ में सब प्रकार का शुभ करने वाला है । एक बचे तो स्वर्ग में अग्निवास हो जो प्राणनाशक है ।

## जारज योग'

चौथ चतुर्दशी नवमी जानो । रवि शनि मंगल पहचानो।
जो तीनों में उत्तरा रहै । निश्चय बिंदु पराया कहै।।

अर्थ- चतुर्थी चतुर्दशी नवमी तिथि हो रवि मङ्गल शनिवार हो और उत्तरभाद्रपद , उत्तराफाल्गुनी , उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो तो अंश पराया होए ।

## राजयोग

सनि-कज्जल चख-झख-लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु।
क्यौं न नृपति है भोगवै लहि सुदेसु सबु देहु ॥

अर्थ- (काजल रूपी शनिग्रह के नेत्र रूपी मीन राशि में) जन्मांग में शनि मीन का हो ऐसे शुभमुहूर्त में जन्म जातक राजा समान शासन करता हैं ।

## राजयोग रहीम

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने, यदा चश्मकोरा भवेत मालखाने ।
तदा ज्योतिषी क्या लिखेगा पढ़ेगा, हुआ बालक बादशाही करेगा ॥

अर्थ- (मुश्तरी - बृहस्पति, कर्कटे कर्क राशि, कमाने - धनुष, चश्मखोरा-आँख कमजोर शुक्र, मालखाने धनभाव) जिसकी कुंडली में शुक्र दुसरे खाने में हो और बृहस्पति कर्क या धनु राशि में हो तो वो व्यक्ति भिखारी के घर में पैदा होकर भी राजा ही बनेगा |

## व्यापार व शेयर बाजार

श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग हय रेवती सखाउ ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुँ न जाइहि काउ ।।

अर्थ- गोस्वामीजी लिखते हैं- श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी, रेवती तथा अनुराधा में किया गया व्यापार एवं दिया गया धन, धनवर्द्धक होता है। किसी भी परिस्थिति में यह सम्पत्ति डूब नहीं सकती ।

## धन नष्ट

ऊगुन पूगुन बि अज कृम आभ अमू गुनु साथ।
हरो धरो गाड़ो दियो धन फिरि चढ़ड़ न हाथ।।

अर्थ- तुलसीदास जी कहते हैं-उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, रोहिणी, कृत्तिका, मघा, आर्द्रा, भरणी, अश्लेषा और मूल नक्षत्रों में चोरी हुआ, छिना हुआ, उधार दिया हुआ, गाड़ा हुआ या किसी प्रकार से हाथ से निकला हुआ धन कभी भी वापस नहीं आता ।

## कुयोग

रबि हर दिसि गुन रस नयन मुनि प्रथमादिक बार।
तिथि सब काज नसावनी होइ कुजोग बिचार।।

अर्थ- तुलसीदास जी कहते है- रवि को द्वादशी, सोम को एकादशी, मंगल को दशमी, बुध को तृतीया, गुरु को षष्ठी, शुक्र को द्वितीया और शनिवार को सप्तमी तिथियाँ पड़ तो सब कार्यों को नष्ट करने वाला कुयोग बनता है ।

## घातक चन्द्र

ससि सर नव दुइ छ दस गुन मुनि फल बसु हर भानु।
मेषादिक क्रम तें गनहि घात चंद्र जियँ जानु ।।

अर्थ- मानसकार कहते है- मेष का प्रथम, वृष का पंचम, मिथुन का नौवें, कर्क का दूसरे, सिंह का छठे, कन्या का दसवें, तुला का तीसरे, वृश्चिक का सातवें, धनु का चौथे, मकर का आठवें, कुम्भ का ग्यारहवें और मीन का बारहवें घर में चन्द्रमा पड़े तो वे चन्द्र घातक बन जाता हैं।

## द्वादश राशी

मानौ मेष प्रथम सदा वृषभ दूसरी होय ।
मिथुन कर्क का क्रम बना सिंह पांचवीं सोय ।।
सिंह पांचवी सोय कि कन्या षष्ठम जानौ ।
तुला औ वृश्चिक जोड़ राशि धनु नवम बखानौ ।।
दसम मकर कुम्भ मीन द्वादश ठानौ।
राशि जो होय उसी को होरा मानौ ।।

अर्थ- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुम्भ मीन द्वादश राशि इनके होरा होते हैं ।

## ग्रहों के पद

राजा नवग्रह भास्कर रानी चन्द्र प्रमान।
सेनापति अंगार है राजकुंवर बुध जान ।।
राजकुंवर बुध जान शुक्र गुरु मंत्री होवै।
दास शनिश्वर मान कुदृष्टी से सब रोवै ।।
कवि प्रकाश निज ज्ञान शुभद पद नव ग्रह साजा।
ग्रह पीड़ा जो होय दान करते सब राजा ।।

अर्थ-नवग्रहों का राजा सूर्य रानी चन्द्र सेनापति मङ्गल राजकुमार बुध गुरु शुक्र मन्त्री शनि दास जिनकी वक्र दृष्टि से सब रोते हैं। प्रकाश कवि कहते है- नवग्रह अपने श्रेष्ठता से अपने आप पदासीन है इनकी पीड़ा दान को अच्छा फल कहा है।

## विंशोत्तरी दशा

सूर्य चन्द्र कुज राहु गुरु, शनि बुध केतु शुक्र।
विंशोत्तरी महादशा का है क्रमवार सुचक्र ।।
सूर्य समय छे वर्ष बखाना ।। दशम वर्ष बिधु अवधि प्रमाना ।।
सात वर्ष रह ग्रह अंगारा। वर्ष अठारह राहु विकारा ।।
सोलह वर्ष ब्रह्मपति माना। उन्निश वर्ष शनिश्चर जाना ।।
भार्गव दशा वर्ष रह बीशा। बिनय करउ श्रीपति जगदीशा ।।

अर्थ- सूर्यचन्द्र मङ्गल राहु गुरु शनि बुध केतु शुक्र यह विंशोत्तरी महादशा चलने का क्रमचक्र हैं। विंशोत्तरी दशा में सूर्य छः वर्ष ,दस वर्ष चंद्रमा ,सात वर्ष मङ्गल ,अठाहर वर्ष राहु ,सोलह वर्ष गुरु
उन्नीस वर्ष शनि शुक्र बीस वर्ष (केतु सात वर्ष) की दशा भोगत हैं ऐसा ज्योतिष जगदीश का मत है।

## गोचर दशा

सूर्य मास एक भोगै राशी। चन्द्र सवा दो दिन पारिभाषी ।।
मंगल डेढ़ माह को जाना। बुध कर सवा माह परमाना ।।
तेरह मास भोग गुरुदेवा। मास एक जानहु शुक देवा ।।
ढाई वर्ष शनिश्चर वासा। राहू केतु अठारह मासा ।।

अर्थ- सूर्य एक मास ,चन्द्रमा सवा दो दिन ,मङ्गल डेढ़ माह ,बुध सवा माह ,गुरु तेरह मास ,शुक्र एक माह , शनि ढाई साल और राहु केतु अठारह मास गौचर दशा भोगते हैं

## गोचर फल समय

आदौ पाँच दिवस रवि जानौ। अंतिम घडी तीनि शशि मानौ ।।
आठ दिवस आदौ कुज माना। बुद्ध सदा रह एक समाना ।।
मध्य मास दुइ गुरु फलदाई।बीच सात दिन शुक प्रभुताई ।।
शनि प्रभाउ अंतिम षट मासा। राहु केतु अंतिम त्रय मासा ।।

अर्थ- सूर्य प्रारम्भ के ५ दिन , चन्द्र अन्त की ३घड़ी , मङ्गल प्रारम्भ के ८ दिन , बुध सदा एक जैसे , गुरु विच के २ माह ,शुक्र बीच के ७दिन , शनि अन्त के ६मास , राहू केतु अन्त के ३ मास में अपना गौचर फल देते हैं।

### तात्कालिक मित्रता व शत्रुता

एकादश, द्वादश, त्रय, जानहु। द्वय, दश, चतुर्थ मित्र ही मानहु ।।
पंचम, अष्टम, नवम बखाना । प्रथम षष्ठ सातवं रिपु माना ।।

अर्थ- किसी भी ग्रह से २-३-४-१०-११-१२ वैं स्थान पर बैठ ग्रह गणना क्रम ग्रह का तात्कालिक मित्र होता है। जन्म कुण्डली में किसी भी ग्रह से १-५-६-७-८-९वैं स्थान पर स्थित ग्रह उस ग्रह का तात्कालिक शत्रु जानना चाहिए।

### ग्रह पूर्ण दृष्टि

तीसरि दशम दृष्टि शनिदेवा। पंचम नवम दृष्टि गुरुदेवा ।। अष्टम चौथि द्रष्टि कुज जाना। मंगल गृह सेनापति माना ।।

अर्थ- ३-१० शनि , ५-९ गुरु , ८-४मङ्गल पूर्ण दृष्टि होती हैं। (

### गृह द्रष्टि विचार

तीसरि दसम दृष्टि चौथाई। पंचम नवम दृष्टि अधिआई ।।
चौथे अष्टम दीख त्रिपादा। सप्तम देखहिं चारिउ पादा ।।
सब गृह देखहिं एक समाना। विनय करौ श्रीपति भगवाना ।।

अर्थ-सभी ग्रह एक समान ३-१० से चौथाई दृष्टि (एकपाद) से देखते हैं उससे अधिक ५-९ द्विपाद दृष्टि , ४-८ त्रिपाद दृष्टि और सप्तम सभी ग्रहों की चतुष्पाद (पूर्ण) दृष्टि हैं।

### उच्च नीच ग्रह

सूर्य मेष वृष चन्द्रमा, मंगल मकरा उच्च।
बुध कन्या गुरु कर्कट, शुक्र मीन सर्वोच्च ।।
शनि तुला राहू मिथुन, केतु उच्च धनु जान।
उच्च राशि से सातवें, सब गृह नीच प्रमान

अर्थ- सूर्य मेष में , चन्द्र वृषभ में , मङ्गल मकर में , बुध कन्या में , गुरु कर्क में , शुक्र मीन में शनि तुला में , राहु मिथुन में केतु धनु में उच्च हैं। सभी ग्रह उच्च राशि से सप्तम राशि में नीच होते हैं।

### ग्रहों के मित्र सम शत्रु

सूर्य मित्र कह शशि गुरु मंगल। बुध सम शनि शुक्र करहि अमंगल ।।
चन्द्र मित्र बुध दिनकर अहहीं। मंगल शनि शुक्र गुरु सम लहहीं ।।
भौम मित्र कह शशि गुरु दिनकर। बुद्ध शत्रु सम शुक्र शनिश्वर ।।

## चौघड़िया फल

चर में चक्र चलाइए, उद्वेग थलगार।
शुभ में स्त्री श्रृंगार करे , लाभ में करो व्यापार ।।
रोग में रोगी स्न्नान करे, काल मे करो भंडार ।
अमृत में काम सभी करो , सहाय करे करतार।।

चर :- में वाहन, मशीन आदि का कार्य करना चाहिए । उद्वेग:- में भूमि संबंधी कार्य कर सकते है। शुभ :- में स्त्री श्रृंगार करे। शुभ में आप सगाई की रस्म ,महिला को चूड़ा पहनाने की रस्म आदि स्त्री श्रृंगार का कार्य आप शुभ में कर सकते है। लाभ :- अगर आप व्यापार प्रारंभ करना चाहिए । रोग :- में रोगी जब रोगमुक्त हो, तब उसे स्न्नान करवाये तो रोग की पुनरावृत्ति नही होती है। काल :- काल मे धन जमा करने पर धन बढ़ता है। अमृत :- में सभी शुभ कार्य करने चाहिए सभी का फल उत्तम होता है ।

## अकाल

आद्रा तो बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय ।
तौ जानौ ये भड्डुरी, बरखा बूँद न होय ॥

यदि मृगशिरा में हवा न चले और आर्द्रा में वर्षा न हो तो भड्डुरी का कहना है कि एक बूँद भी पानी नहीं बरसेगा ।

लगे अगस्त फुले बन कासा। अब छोड़ो बरखा की आसा ॥

अगस्त तारा के उदय हो जाने पर और बन में कास के फूलने पर वर्षा होने की आशा छोड़ देनी चाहिये।

सावन सुक्र न दीसै, निहचै, पड़े अकाल ॥

यदि सावन महीने में शुक्रका दर्शन न हो तो अवश्य अकाल पड़ेगा।

चित्रा स्वाति विसाखड़ो, जो बरसै आषाढ़
चालो नरा विदेसड़ो, परिहै काल सुगाढ़ ॥

यदि आषाढ़ में चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र में वर्षा हो तो भयंकर अकाल पड़ेगा। मनुष्य मात्र को विदेश की राह लेनी होगी।

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहि विचार ।
पंद्रह मुहुरत बारी होय, देस उजाड़ करै यों जोय ॥

यदि कर्क की संक्रान्ति मंगलवार को और मकर की संक्रान्ति शनिवार को पड़े तथा वह पन्द्रह मुहूर्त को हो तो देश को उजाड़नेवाला अकाल पड़ेगा।

बुद्ध मित्र रबि शुक्र बखाना। शनि गुरु कुज सम शशि रिपु माना ।।
गुरु कर मित्र चन्द्र रबि भौमा । बुध शुक्र शत्रु शनिश्वर समा ।।
भार्गव मित्र शनि बुध जानौ। कुज गुरु सम रवि शशि रिपु मानौ ।।
रविसुत मित्र शुक्र अरु बुद्धा। गुरु सम रवि कुज विधु रह क्रुद्धा ॥

अर्थ- सूर्य के चंद्र मंगल गुरु मित्र बुध सम शुक्र शनि (राहु) शत्रु हैं। चंद्र के सूर्य बुध मित्र , मंगल गुरु शुक्र शनि सम , (राहु शत्रु हैं)। मंगल के सूर्य गुरु चन्द्र मित्र , शुक्र शनि बुध (राहु) शत्रु हैं। बुध के मित्र रवि शुक्र (राहु) मित्र शनि गुरु मंगल सम चन्द्र शत्रु हैं। गुरु के मित्र सूर्य चन्द्र मङ्गल मित्र , शनि (राहु) सम , बुध शुक्र शत्रु है। शुक्र के बुध शनि (राहु) मित्र मङ्गल गुरु सम , सूर्य चन्द्र शत्रु हैं। शनि के बुध शुक्र (राहु) मित्र , गुरु सम , सूर्य चंद्र मंगल शत्रु हैं। (राहु के बुध शुक्र शनि मित्र ,गुरु सम , सूर्य चंद्र मंगल शत्रु हैं। केतु के बुध मित्र हैं।)

## राशि स्वामी

मेष भौम वृष भार्गव होई। मिथुनाधिप बुध कह सब कोई ।।
कर्क चन्द्र सिंह दिनकर जानी। कन्या बिधुज बिधुंतुद मानी ।।
तुला शुक्र वृश्चिक कुज जाना। धनु स्वामी गुरुदेव बखाना ।।
मकर कुम्भ स्वामी शनिदेवा । मीनाधिप केतू गुरुदेवा ॥

अर्थ- मेष का मङ्गल , वृषभ का शुक्र , मिथुन का बुध , कर्क का चन्द्र , सिंह का सूर्य , कन्या का बुध राहु ,तुला का शुक्र ,वृश्चिक का भौम , धनु का गुरु , मकर कुम्भ का शनि ,मीन का गुरु केतु स्वामी है।

## बलाबल काल बल

जातक जन्म पाव जो रजनी। काल बली कुज चन्द्र अरु शनि ।।
जो जातक जन्मै दिन मांही। सूर्य शुक्र बुध बली कहाहीं ॥

अर्थ- जातक का जन्म रात में हो तो चन्द्र मङ्गल शनि रात में बलवान होते हैं। दिन में जन्म हो तो सूर्य बुध शुक्र दिन में बलवान होते हैं।

## स्थान बल

स्व गृह उच्च मित्र ग्रह पड़ें जो निज द्रेश्काण ।
सो जानहु स्थान बल सब ग्रह कर प्रमाण ।।

अर्थ-स्वग्रही उच्चस्थ और मित्र घर में स्वयं के द्रष्कोण (मूल त्रिकोण) पड़े सभी ग्रह स्थान बलि होते हैं।

## दिग्बल

बुध गुरु लग्न सुहृद शुक्र शशि । सप्तम शनि दिग्बली कहायसि ।।
दशम सूर्य कुज दिग्बल जाना। बन्दहु सब ग्रह का करी ध्याना ।।

अर्थ- बुध गुरु लग्न में ,शुक्र चन्द्र चतुर्थ में ,शनि सप्तम में ,सूर्य मङ्गल दशम भाव में दिग्बली होते है।

### नैसर्गिक बल

शनि से कुज, कुज से बुध जाना। बुध से गुरु गुरु से शुक माना ।।
शुक्र से चन्द्र, चन्द्र से दिनकर। होहि नैसर्गिक बल उत्तरोत्तर ।।
अर्थ- शनि से मङ्गल , मङ्गल से बुध , बुध से गुरु , गुरु से शुक्र , शुक्र से चन्द्र , चन्द्र से सूर्य उत्तरोत्तर अधिक बलि होते हैं । ज्योतिष में जिसे नैसर्गिक बल कहा गया है ।

### द्रग्बल

शुभ ग्रह द्रष्ट द्रग्बली कहावै । द्रष्टि पाइ ग्रह बल बढि जावै ।।
अर्थ- शुभ ग्रह के देखने से द्रगबलि होता हैं । शुभग्रह की दृष्टि बल बढ़ता है ।

### चेष्टा बल

मकर कुम्भ वृष मेष झष मिथुन राशि परमान ।
इनमें शशि संग ग्रह पड़ें तो चेष्टा बल जान ।।
अर्थ- मकर कुम्भ वृषभ मेष मीन मिथुन राशि चेष्टा (छ गुना) बलि होती हैं । इन राशियों में शनि के साथ इन राशियों के स्वामी युत हो तो चेष्ट बल होता है ।

### ग्रहों की अवस्था

जो ग्रह निज नवांश होई। जागरूक कह तेहि सब कोई ।।
शयन मित्र नवांश में जाना। शत्रु नीच में अस्त बखाना ।।
अर्थ- सभी ग्रह अपने नवांश में जागृत , मित्र नवांश में सुषुप्त , शत्रु व नीच नवांश में अस्त होता हैं ।

### तन्वादि संज्ञा भाव

तनु लग्न मूर्ति तनु उदय वपु आद्य कल्प अंग जानु ।
द्वादश संज्ञा लग्न की भली भांति पहिचानु ।।
अर्थ- तनु लग्न मूर्ति तनु उदय वपु आदि कल्प और अङ्ग बारह नामक संज्ञा प्रथम भाव की पहचान है ।

### धन भाव

स्व कोष अर्थ कुदुम्ब धन ये पंचम धन भाव ।
ज्योतिष का सम्मान कर इष्ट देव को ध्याव ।।
अर्थ- स्व कोष (भंडार) अर्थ (पैसा) कुटुम्ब (परिवार) धन यह पांच नाम दूसरे भाव के हैं।

### भ्रातृ भाव

सहज भ्रात्र दुश्चिक्य बखाना। भ्रात्र भाव संज्ञा संज्ञाना ।।
अर्थ- सहज भ्रत्र दुश्चिक्य (साहस एकता) यह भातृ भाव के संज्ञा नाम है ।

### मातृ भाव

अम्बा तूर्य हिबुक पाताला । सुहृद यान वाहन गृह शाला ।।
अम्बु नीर जल वाहन अहंहीं। द्वादश संज्ञा सुहृद की कहहीं ।।
अर्थ-अम्बा (माँ) तुर्य (चतुर्थ) हिबुक पाताल सुह्रद वाहन गृह अम्बु आदि उपर दर्शाई गई बाहर संज्ञा तीसरे भाव की है ।

### सुत भाव

तनय तनुज विद्या बुधि आत्मज । वाक् पुत्र को पंचम कह द्विज ।।
अर्थ- तनय विद्या बुद्धि वाक (वाणी) आदि पञ्च संज्ञा पांचवे भाव की हैं ।

### बैरी भाव

रिपु द्वेषी वैरी क्षत कहहीं। चारिउ संज्ञा षष्ठ की अहहीं ।।
अर्थ- रिपु (शत्रु)बैरी द्वेषी क्षत (आघात टूटा) चार संज्ञा छठे भाव की है।

### स्त्री भाव

स्त्री स्मर काम मदन मद । द्यून अस्त जामित्र सप्त वद ।।
अर्थ- स्त्री स्मर काम मदन मद (कामदेव के नाम है) द्युन अस्त (छिपा हुआ) जामित्र (जाया मित्र) यह सब सातवें भाव के नाम ।

### म्रत्यु भाव

लयपद याम्य छिद्र अरु रंद्रा । आयु निधन कह कोविद वृंदा ||
अर्थ- लयपद(मृत्यु) याम्य (दक्षिण) छिद्र रन्द्र आयु निधन आदि नाम आठवें भाव के है ।

### धर्म भाव

गुरु तप मार्ग धर्म शुभ माना। पंचम भाव नवम के जाना ||
अर्थ- गुरु (सद्गुरु) तप मार्ग धर्म शुभ यह पांच नाम नवें भाव के हैं ।

### कर्म भाव

मेषुरण आज्ञास्पद कर्म मान व्यापार |
व्योम नभस गगन मध्य तात दशम व्यवहार ||
अर्थ- ऊपर दोहे वर्णित सभी दशम भाव के नाम ही है ।

### आय भाव

आगम प्राप्ति आय त्रय भावा । एकादश की संज्ञा गावा ।।
अर्थ- आगम (आना) प्राप्ति के यह तीन संज्ञा ग्यारवें भाव के नाम है।

### व्यय भाव

अंतिम प्रान्त्य रिश्फ़ ब्यय जानौ । द्वादश भाव की संज्ञा मानौ ।।
अर्थ- अंतिम प्रान्त्य (सीमा) रिश्फ ब्यय आदि संज्ञा बारहवें भाव की है।

### भाव संज्ञा

प्रथम दशम चतुर्थ अरु सप्तम । मानहिं ज्योतिष कोविद केंद्रम ।।
चतुष्टय कंटक केंद्र हि मानौ। पंचम नवम त्रिकोण बखानौ ।।
दूसर पंचम अष्टम जाना। एकादश को पणफर माना ।।
द्वादश तीसर षष्ठ नवम । ज्योतिष संज्ञा है आपोक्लिम ।।
अर्थ- १-४-७-१० भाव को ज्योतिषज्ञ विद्वान ने केन्द्र माना है और इनको चतुष्टय (चार) कण्टक केन्द्र नामों से माना है । ५-९ भाव को त्रिकोण वाख्या है , २-५-८-११ भाव को फणकार ,१२-३-६-९ भाव की ज्योतिष में आपोक्लिम नाम संज्ञा दी है।

### नक्षत्र राशि

अश्वनि भरणी कृती एक पद । मानहि मेष राशि ज्योतिषविद ।।
कृतिका त्रय पद रोहिणि जानौ । मृगशिर आधा वृषभ बखानौ ।।
मृगशिरार्धम आर्द्रा आवै। पुनरे त्रय पद मिथुन कहावै ।।
अंतिम पाद पुनर्वसु जाना। पुष्यश्लेषा कर्कट माना ।।
मघा और पूर्वा फाल्गुनी। उत्तर पाद सिंह कह गुनी ।।
उत्तर फाल्गुन केर तीन पद । हस्त चित्रार्धम को कन्या वद ।।
चित्रार्धम स्वाती को जाना। त्रिपद विशाषा तुला बखाना ।।
विशाषा एक पाद अनुराधा । ज्येष्ठ पूर्ण वृश्चिक को साथा ।।
मूल पूर्वा षाढ बखाना। षाढ उत्तरा पद धनु जाना ।।
अर्थ- अश्विनी ४चरण भरणी ४चरण कृतिका १चरण की मेष राशि , कृतिका ३चरण रोहिणी ४चरण मृगशिरा २चरण की वृष राशि , मृगशिरा २चरण आर्दा ४चरण पुर्नवसु ३चरण की मिथुन राशि ,पुर्नवसु १चरण पुष्य ४चरण आश्लेषा ४चरण की कर्क राशि , मघा ४ चरण पू. फाल्गुनी ४चरण उ.फाल्गुनी १चरण कि सिंह राशि , उ. फाल्गुनी ३चरण हस्त ४चरण चित्रा ४चरण की कन्या राशि , चित्रा २चरण स्वाती ४चरण विशाखा ४चरण की तुला राशि , विशाखा १चरण अनुराधा ४चरण ज्येष्ठा ४चरण की वृश्चिक राशि ,मूला ४चरण पू.आषाढ़ा ४चरण उ.आषाढ़ा १चरण की धनु राशि जाननी चाहिए ।

त्रय पद आवै षाढ उत्तरा । श्रवण धनिष्ठार्धम है मकरा ।।
अर्ध धनिष्ठा शतभिष गावा। पूर्व भाद्रत्रय कुम्भ बतावा ।।
पूर्व भाद्रपद एक पद, उत्तर भाद्र प्रमान ।
रेवति के चारो चरण, मीन कहहि विद्वान् ।।
अर्थ- उ.अषाढ़ा ३चरण श्रवण ३चरण धनिष्ठा २चरण की मकर राशि , धनिष्ठा २चरण शतभिषा ४चरण पू.भाद्रपद ३चरण की कुम्भ राशि , पू.भाद्रपद १चरण उ.भाद्रपद ४चरण रेवती ४चरण की मीन राशि विद्वान ने कही है ।

## जाया भाव महत्व

जनमपत्रिका बरति के देखहु मनहिं बिचारि ।
दारुन बैरी मीचु के बीच बिराजति नारि ।।
अर्थ- भयानक वैरी और मृत्यु के बीच पति या पत्नी का स्थान होता है। यानी पत्नी शत्रु और मृत्यु के मध्य बैठ मध्यस्थता करती है। अगर पत्नी सुलक्षणा एवं पतिव्रता है तो पति के शत्रु होते ही नहीं, अगर हुए भी तो वे ज्यादा कष्टदायक सिद्ध नहीं होंगे, उसका पति दीर्घायु होता है, उसकी मृत्यु स्वाभाविक कारणों से होती है। किंतु यदि पत्नी दुष्टा, कुलक्षणी और पतिवंचक हुई; तब पति के बड़े-बड़े भयकारी, कष्टदायक शत्रु हो जाते हैं तथा उसकी आयु छोटी हो जाती है; वह अल्पायु में ही अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

## सामुद्रिक ज्योतिष

जाकी छाती न एकौ बार । उनसे सब रहियौ हुशियार।।
अर्थ- घाघ ! कहते हैं, जिस मनुष्य की छाती पर एक भी बाल नहीं हो, उससे सावधान रहना चाहिए। क्योंकि वह कठोर हृदय, क्रोधी व कपटी हो सकता है। "मुख-सामुद्रिक" के ग्रन्थ भी घाघ की उपरोक्त बात की पुष्टि करते हैं।

## द्वादश मास निषेध

चैते गुड़ बैसाखे तेल । जेठ मे पंथ आषाढ़ में बेल।।
सावन साग न भादों दही । क्वारें दूध न कातिक मही ।।
मगह न जारा पूष घना । माधै मिश्री फागुन चना।।
अर्थ- घाघ ! कहते हैं, चैत में गुड़, वैशाख में तेल, जेठ में यात्रा, आषाढ़ में बेल(कुछ जगह बेल सावन में मना है), सावन में हरे साग, भादों में दही, क्वार (आसोज) में दूध, कार्तिक में मट्ठा, अगहन(मार्गशीष) में जीरा, पौष में धनियां, माघ में मिश्री, फागुन में चने खाना हानिप्रद होता है।

## मास विहित

सावन हौं भादों चीता । क्वार मास गुड़ खाहू मीता।।
कातिक मूली अगहन तेल । पूस में करे दूध सो मेल ।।
माघ मास घी खिचरी खाय । फागुन उठि के प्रातः नहाय ।।
चैत मास में नीम सेवती । बैसाखहि में खाय बसमती ।।

## वर्षा कृषि प्रकरण

आदि न बरसे अद्रा, हस्त न बरसे निदान।
कहै घाघ सुनु घाघिनी, भये किसान-पिसान।।
अर्थ- आर्द्रा नक्षत्र के आरंभ और हस्त नक्षत्र के अंत में वर्षा न हुई तो घाघ कवि अपनी स्त्री को संबोधित करते हुए कहते हैं कि ऐसी दशा में किसान पिस जाता है।

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज, बीज बरसन्त।
नासै लक्षण काल का, आनन्द माने सन्त ।।
अर्थ- आषाढ़ माह की पूर्णमासी को यदि आकाश में बादल गरजे और बिजली चमके तो वर्षा अधिक होगी और अकाल समाप्त हो जाएगा तथा सज्जन आनंदित होंगे।

उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहै जु बाव।
घाघ कहै सुनु घाघिनी, बळधा भीतर लाव।।
अर्थ- यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो और पुरवा हवा बह रही हो तो घाघ अपनी स्त्री से कहते हैं कि बैलों को घर के अंदर बांध लो, वर्षा शीघ्र होने वाली है।

उलटे गिरगिट ऊंचे चढ़े। बरखा होई भूई जल बुड़े।।
अर्थ- यदि गिरगिट उलटा पेड़ पर चढ़े तो वर्षा इतनी अधिक होगी कि धरती पर जल ही जल दिखेगा।

करिया बादर जीउ डरवावै। भूरा बादर नाचत मोर पानी लावै।।
अर्थ- आसमान में यदि घनघोर काले बादल छाए हैं तो तेज वर्षा का भय उत्पन्न होगा, लेकिन पानी बरसने के आसार नहीं होंगे। परंतु यदि बादल भूरे हैं व मोर थिरक उठे तो समझो पानी निश्चित रूप से बरसेगा।

चमके पच्छिम उत्तर कोर। तब जान्यो पानी को जोर।।
अर्थ- जब पश्चिम और उत्तर के कोने पर बिजली चमके, तब समझ लेना चाहिए कि वर्षा तेज होने वाली है।

चैत मास दसमी खड़ा, जो कहुं कोरा जाइ।
चौमासे भर बादला, भली भांति बरसाइ।।
अर्थ- चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को यदि आसमान में बादल नहीं है तो यह मान लेना चाहिए कि इस वर्ष चौमासे में बरसात अच्छी होगी।

### ओले गिरने के लक्षण

माघ में बादर लाल घिरै। तब जान्यो सांचो पथरा परै ।।

अर्थ- यदि माघ के महीने में लाल रंग के बादल दिखाई पड़ें तो ओले अवश्य गिरेंगे।

रोहनी बरसे मृग तपे, कुछ दिन आर्द्रा जाय।
कहे घाघ सुनु घाघिनी, स्वान भात नहिं खाय।।

अर्थ- घाघ कहते हैं कि हे घाघिन ! यदि रोहिणी नक्षत्र में पानी बरसे और मृगशिरा तपे और आर्द्रा के भी कुछ दिन बीत जाने पर वर्षा हो तो पैदावार इतनी अच्छी होगी कि कुत्ते भी भात खाते-खाते ऊब जाएंगे और भात नहीं खाएंगे।

सावन केरे प्रथम दिन, उवत न दीखै भान।
चार महीना बरसै पानी, याको है परमान ।।

अर्थ- यदि सावन के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को आसमान में बादल छाए रहें और प्रातःकाल सूर्य के दर्शन न हों तो निश्चय ही ४ महीने तक जोरदार वर्षा होगी।

(आगे वर्षा विशेष वर्णन करेंगें)

### खाने से मौत

जाको मारा चाहिए, बिन मारे बिन घाव।
वाको यही बताइये, घुइया पूरी खाव ।।

अर्थ- यदि किसी से शत्रुता हो तो उसे अरबी की सब्जी व पूडी खाने की सलाह दो। इसके लगातार सेवन से उसे कब्ज की बीमारी हो जायेगी और वह शीघ्र ही मरने योग्य हो जायेगा।

### प्रश्न कुंडली धातु प्रश्न

केन्द्रस्थित वा केन्द्रपत्ति सूर्य भौम बलवान ।
प्रश्न धातु सम्बन्धी है कहते यों विद्वान ॥

अर्थ - केन्द्र में स्थित अथवा केन्द्र अधिपति बलवान सूर्य या मंगल हो तो धातु सम्बन्धी (रुपये पैसे सम्बन्धी) कहना चाहिए।

### मूल मुख्य प्रश्न

बुध या शनि केन्द्रस्थ हो केन्द्राधिप बलवान ।
मूल प्रश्न उसको सभी बतलाते मतिमान ।।

अर्थ - यदि बुध या शनि बलवान होकर केन्द्र में हो या केन्द्र के अधिपति हो तो उसे मूल प्रश्न कहना चाहिए।

## जीव प्रश्न

चन्द्र, शुक्र, गुरु केन्द्र में या केन्द्राधिप देख।
जीव प्रश्न कह दो तुरन्त, इसमें मीन न मेख ॥
अर्थ- चन्द्र शुक्र गुरु केन्द्रस्थ हो या केंद्र स्वामी देख रहे हो तो तुरन्त जीव प्रश्न कहना चाहिए ।

## काल चक्र फल

मघा अश्लेषा पूरब झप्पे । जाय शीश सिर सेती कम्पे ।।
आद्रा भरणी दक्षिण टारो। घर बैठा हांके हंकारो ।।
मूल स्वाति पश्चिम पल्या। बड़ा बड़ा मुनि राजा छल्या।।
उत्तर हस्त रोहिणी चाले। साप रा मूंडा में अंगूठो घाले ॥
दोहा - आठ नक्षत्र चारों दिशा, जोशी जाणे भेव ।
काल चक्र आगा टले, इसे भाखे सहदेव ॥
अर्थ- मघा अश्लेषा में पूर्व , आद्रा भरणी में दक्षिण , मूल स्वाति में पश्चिम ,हस्त रोहिणी में उत्तर दिशा , नहीं जाना चाहिए । पूर्व जावो सिर से चक्र खाने समान , दक्षिण जाओ तो घर बैठा काल हाँकरावे , उत्तर जाना सर्प के मुँह में अंगूठा देने समान हैं । सहदेव कहते हैं- आठ नक्षत्र में दिशाओं के काल का वास है कोई ज्योतिषी ही इस भेद को जनता हैं , इनको टालने से काल का चक्र टले ।

## शरीर पर चन्द्रवास

जन्म को पांचवा तीजो शीस। नवमी छठो गिणीज्यों पीठ ।।
दूजे चौथे हाथों आण । आठवों बारवों पांचों जाण ।। रुद्र सप्त दश हिये बखाण।।
हिये हाये तो अति सुख पावे। शीष को वासो द्रव्य दखावे।।
पूठ कर बरो, पैरों पर नास। हाथ को वासो पूरे आस ।।
अर्थ- जन्म का चन्द्र ५-३ हो सिर पर , ९-६ पीठ पर , २-४ हाथ पर , ८-१२- पैरो पे , ७-११-१० हियँ पर चन्द्र वास माना जाता है । हियँ से सुख , सिर पर धनलाभ , पुठ पर बैर ,पैरो पर नास और हाथ पर सब सुख हो ।

## गांव का सिरांतियां पगांतिया

गरुड़ श्वान पूरब सिर लेवा, सिंह बिलाव उत्तर केवा। मूषक सर्व पश्चिम सिर जाणो, मृग मेंढा दक्षिण दिश जाणो। जैसे - अ, आ आदि स्वर का नाम हो तो उस नगर का पूर्व से सिराहना बताना चाहिए। बिलाव और सिंह वर्ग का उत्तर सिराहन बतावे। आगे सरल है।

## धरती रजस्वला विचार

पांचम भौम् सातम रवी, बारस बृहस्पति जोय।
भीव कहे रे भड्डुली, धरती रजस्वला होय ।
अर्थ- पंचमी को मङ्गल , सातम को रवि , द्वादशी को गुरुवार हो । भीव कहते हैं- हे भड्डुली ऐसे योग में धरती रजस्वला होती हैं ।

नव तेरा बाईस षट्, एकादश और तीन।
रविया सेती देखलो, धरती होय मलीन ॥
तालाब कुआं, बावड़ी, देवल घर अस्थान।
नीव दियां निश्चय मरे, होम करे तो हान ॥

अर्थ- ९-१३-१२-६-११-३ रवि से धरती मलीन हो। रजस्वला धरा पर जो तलाब कुआ बावड़ी मन्दिर घर नीवं देवें तो निश्चय मृत्यु हो और होम करते तो हानि हो।

## ठिकरियो योग

चौथ शनैश्वर रावण मार्यो। भौम अष्टमी कंस सरार्यो।।
दूज सप्तमी हो भृगुवार। तब जोशीजी करो विचार।।
तब होवे ठीकरियो योग। महिने छटे मृत्यु संयोग।।

अर्थ- चौथ शनि को श्रीरामजी ने रावण को मारा, मङ्गल अष्टमी को श्रीकृष्णजी ने कंस को मारा, द्वितीया सप्तमी शुक्र हो तो ज्योतिषियों को विचार करना चाहिए। इस प्रकार के योग से ठीकरिया योग छः माह मृत्यु योग कारक बने।

## पुत्र विष योग

पुष्य पुनर्वसु नौमी सातां। बालक जन्मे आधी रातां।। आस पास उल्लास भरे।
नाम धरे तो पण्डित मरे।।

अर्थ- पुष्य पुनर्वसु नक्षत्र हो नोमी सप्तमी तिथि को यदि अर्द्धरात्रि बच्चा जन्मे तो नामकरण बताने वाला पण्डित मृत्यु को प्राप्त हो।

(ऐसे विषय मैने देखा है हमारे दादाजी से कोई नाम पूछने आया तो दादाजी देख के बोले मुझे समझ नहीं
आया आप त्रिलोक (काकाजी त्रिलोकचन्द जी जाजड़ा) से पूछो, काका के पास गए तो उन्होंने भी कहा मुझे भी समझ नहीं आया ऐसे करके उस आदमी को पांच पण्डितों में घुमाया जिससे वह तिथि नक्षत्र जन्य बिष उतरा / ऐसा पुराने पंडितजन मानते थे।)

## नक्षत्र दिशाशूल

पूर्व रोहिणी सुण रे मित्रा। उत्तर हस्त दक्षिण में चित्रा।।
पश्चिम श्रवण करो मत गमना। आज हरि रक्षक तो भी मरना ॥

अर्थ- पूर्व में रोहिणी, उत्तर में हस्त, दक्षिण में चित्रा, पश्चिम में श्रवण आदि नक्षत्र दिशाशूल में गमन नहीं करना चाहिए कवि कहता हैं भगवान भी रक्षा ना करें।

## यात्रा में निषेध योग

तुम अदिन गुरू गमन न करण। वृश्चिक सोम पांव नहीं धरणा ॥
कर्कट मंगल होय कलेशा। बुधे मीन जीव नहिं नेसा ॥
धन शुक्रां को गयो न आवे। शनि कुंभ हो मृत्यु बतावे ॥

## चौघड़िया मुहूर्त

चर में चक्र चलाइए, उद्वेग थलगार।
शुभ में स्त्री श्रृंगार करे, लाभ में करो व्यापार ।।
रोग में रोगी स्नान करे, काल मे करो भंडार ।
अमृत में काम सभी करो, सहाय करे करतार।।

अर्थ-चर :- में वाहन चलने वाली वस्तु के कार्य करना चाहिए। उद्वेग:- में भूमि संबंधी कार्य कर सकते है। शुभ में स्त्री श्रृंगार करे। शुभ में आप सगाई , महिला को चूड़ा पहनाने विवाहादि शुभ में करें। लाभ में व्यापार प्रारम्भ करना चाहिए। रोग :- में रोगी जब रोगमुक्त हो, तब उसे स्नान करवाये तो रोग की पुनरावृत्ति नही होती है। काल: काल से धन जमा करने पर धन बढ़ता है। अमृत :- में सभी शुभ कार्य करने चाहिए सभी का फल उत्तम होता है।

## अकाल

आद्रा तो बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय ।
तौ जानौ ये भड्डुरी, बरखा बूँद न होय ॥

अर्थ- यदि मृगशिरा में हवा न चले और आर्द्रा में वर्षा न हो तो भड्डुरी का कहना है कि एक बूँद भी पानी नहीं बरसेगा ।

लगे अगस्त फुले बन कासा। अब छोड़ो बरखा की आसा ॥

अर्थ-अगस्त तारा के उदय हो जाने पर और बन में कास के फूलने पर वर्षा होने की आशा छोड़ देनी चाहिये।

सावन सुक्र न दीसै, निहचै, पड़े अकाल ॥

अर्थ-यदि सावन महीने में शुक्रका दर्शन न हो तो अवश्य अकाल पड़ेगा।

चित्रा स्वाति विसाखड़ो, जो बरसै आषाढ़ ।
चालो नरा विदेसड़ो, परिहै काल सुगाढ़ ॥

अर्थ-यदि आषाढ़ में चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र में वर्षा हो तो भयंकर अकाल पड़ेगा। मनुष्य मात्र को विदेश की राह लेनी होगी।

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहि विचार ।
पंद्रह मुहुरत बारी होय, देस उजाड़ करै यों जोय ॥

अर्थ- यदि कर्क की संक्रान्ति मंगलवार को और मकर की संक्रान्ति शनिवार को पड़े तथा वह पन्द्रह मुहूर्त को हो तो देश को उजाड़नेवाला अकाल पड़ेगा।

## शुभाशुभ

आटो कांटो घी घड़ो, खुल्ले केसां नार।
बावों भलो न दाहिणों, ल्याली जरख सुनार ॥"

अर्थ- आटा, काष्ठ, घी का घड़ा, विधवा स्त्री, भेड़िया, जरख (लोमडी) और सुनार, ये न बाएं अच्छे न दाएँ, यात्रा में सर्वथा निषिद्ध हैं ।

पाँच मंगरो फागुनो, पूस पाँच सनि होय
काल पर तब भडुरी, बीज बवौ जनि कोय ॥ ।
यदि फागुन में पाँच मंगल और पूष में पाँच शनिवार पड़े तो भडुरी कहते हैं कि अकाल पड़ेगा। कोई बीज मत बोये, नहीं तो घर का अन्न भी नष्ट हो जायेगा।

मंगलवारी मावसी, फागुन चैती जोय ।
पसु बेचो कन संग्रहौ, अवसि दुकाली होय ॥
यदि फागुन और चैत की अमावस्या मंगलवार को पड़े तो पशुओं की बिक्री करके अन्न इकट्ठा कर लो। क्योंकि दुर्भिक्ष अवश्य पड़ेगा।

छः ग्रह एकै रासि विलोकौ । महाकाल को दीन्हो कोकौ ॥
यदि छः ग्रह एक ही राशि पर देखो तो महाकाल को निमंत्रण दिया हुआ समझो।

मृगसिर वायु न बादरा, रोहिनि तपै न जेठ
अद्रा जो बरसै नहीं, कौन सह अलसेठ ॥
मृगसिर वायु न बाजिया, रोहिनि तपै न जेठ ।
गोरी बीनै काँकरा, खड़ा खेजड़ी हेंठ ॥
यदि मगृशिरा में हवा न चले और जेठ में रोहिणी न तपे तो वृष्टि न होगी और स्त्रियां खेजड़ी (एक पेड़) के नीचे कंकड़ चुनेंगी।

सावन सुक्ला सप्तमी जो गरजै अधिरात ।
बरसै तो झूरा परै, नाहीं समौ सुकाल ॥
यदि सावन सुदी सप्तमी को आधी रात के समय बादल गरजे और पानी बरसे तो सूखा पड़ेगा, न बरसे तो समय अच्छा बीतेगा।

होली हवा फल
होली झर को करो विचार। सुभ अरु अशुभ कहा फल सार ॥
पश्चिम वायु बहै अति सुन्दर। समयो निपजै सजल वसुन्धर ॥
पूरब दिसि की बहै जो बाई। कछु भीजै कछु कोरो जाई ॥
दक्खिन बाय बहै बध नास । समया उपजै सनई घास ॥
उत्तर बाय बहै दड़ बड़िया । पिरथी अचूक पानी पड़िया ॥
जोर झकोरै चारिउ वाय। दुखया परघा जीव डेराय ॥
जोर झलौ आकासै जाय। तो पिरथी संग्राम कराय ॥

होली के दिन की हवा पर विचार करके उसके शुभाशुभ फलों को समझना चाहिये-यदि पछिवाँ हवा चले तो बहुत उत्तम है। वसुन्धरा जल से सन्तुष्ट रहेगी। पुरुवा हवा चले तो कुछ वर्षा होगी और कुछ झूरा पड़ेगा। दक्खिनी हवा चले तो प्राणियों का वध और नाश होगा तथा समय पर सनई और घास खूब उपजेगी। उत्तरी हवा चले तो वर्षा अवश्य ही होगी। चारो ओर की हवा चले तो देश दुखी होगा और जीवों से भय होगा। हवा ऊपर की ओर जाये तो पृथ्वी पर युद्ध होगा।

आर्द्रा, भरनी, रोहनी, मघा, उत्तरा तीन ।
दिन मंगल आँधी चलै, तब लौं बरखा छीन ॥ ।
यदि मंगल को आर्द्रा, भरणी, रोहिणी और तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उ०षाढ़ा, उ० भाद्रपद) में आँधी चले तो वर्षा कम होगी।

सावन बह पुरवैया , भादो, पछिवाँ जोर ।
हरौ-बदरवा बेंचिकै कंत चलो कैमोर ॥
यदि सावन में पूर्वी हवा और भादो में पश्चिमी हवा चले तो समझ लेना चाहिये कि घोर दुर्भिक्ष पड़ेगा।

जै दिन जेठ बहे पुरवाई। तै दिन सावन धूरि उड़ाई ॥
जेठ महीने में जितने दिन पुरुवा हवा चलती है, सावन का महीना उतने दिन धूल उड़ाता है।

पुरवाई बहुतै बहै विधवा पान चबाय।
ऊ ले आवै नीरको, ई काहू सँग जाय ॥
यदि पूर्वी हवा अधिक चले तो पानी बरसेगा और यदि विधवा स्त्री पान खाती हो तो वह किसी के साथ निकल जायेगी।

वर्षायोग

कलसे पानी गरम हो, चिड़ी बहावै घूर ।
अण्डा ले चिऊँटी चले, तौ बरखा भरपूर ॥

मोर पंख बादर उठे, राड़ा काजर रेख ।
वह बरसै वह घर करै, भायें मीन न मेख ॥
यदि मोर के पंख के समान बादल उठे तब वर्षा होगी। विधवा की आँखों में काजल की रेखायें लगी हो तो वह दूसरा पति करेगी, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।

एक पानी जो बरसै स्वाती । कुरमिन पहिरै सोनेके पाती ।
यदि स्वाती नक्षत्र एक बार बरस देता है तो कुर्मिन भी सोने के गहने पहनती है।

चित्रा बरसे तीनि जात है, उर्दी तिल्ल कपास।
चित्रा बरसे तीनि होत हैं, साली सक्कर मास ॥
चित्रा की वर्षा से उर्दी, तिल और कपास ये तीनों नष्ट हो जाते हैं किन्तु धान, ईख और गेहूँ की पैदावार बढ़ती है। यहाँ मास शब्द का अर्थ गेहूँ लगाना चाहिए ।

मघा, भूमि अघा।
मघा नक्षत्र की वर्ष भूमि को तृप्त कर देती है।

मघा के बरसे, माता के परसे।
भूखा न मांगे, फिर कुछ हरसे॥
मघा नक्षत्र के बरसने और माता के भोजन परोसने पर भूखे को भगवान् से भी नहीं मांगना पड़ता।

साठी होवै सठवें दिन। जब पानी पावै अठवें दिन॥
यदि साठी धानको हर आठवें दिन भी पानी मिलता जाये तो वह साठ दिन में हो जाता है।

मेदिनी, मेघा, भैंस, किसान। मोर, पपीहा, घोड़ा, धान।
बाढ्यो मच्छ लता लपटानी। दसौ सुखी जब बरसै पानी॥
पृथ्वी, मेढक, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लता ये दसों तभी सुखी होते हैं जब पानी बरसता है।

खेत बोवाई

दिवाली को बोये दिवालिया।
दीवाली के दिन बीज नहीं बोना चाहिये।

कर्क बुवावै काकरी, सिंह अबोलो जाय।
ऐसा बोलै भड्डुरी, कीड़ा फिर फिर खाय॥
यदि कर्क राशि में ककड़ी बोयी जाये और सिंह में न बोयी जाये तो उसमें भड्डुरी कहते हैं कि बारम्बार कीड़े लगेंगे।

बोवै बजरा आये पुक्ख। फिर मन कैसे भोगै सुक्ख॥
पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोने से किसान कैसे सुखी रह सकता है, बाजरा बोने का नक्षत्र तो श्लेषा है। यदि उपजाऊ खेत हो तो मघा में भी बोया जा सकता है।

सातो पांच तृतीया, दसमी एकादसिमें जीव।
एही तिथिन पर जोतऊ, तो प्रसन्न हो सीव॥
सप्तमी, पंचमी, तृतीया, दशमी और एकादशी में जीव वास करता है। इन तिथियों में खेत जोतने से शिवजी प्रसन्न होंगे। (अन्य ज्योतिष शास्त्र में एकादशी को खेत जोतना मना किया है :- पं श्रीराधे जोशी )

रोहिनि मृगसिर बोये मक्का। उरदी मड़वा दे नहिं टक्का ॥
मृगसिरमें जो बोवै चेना। जमींदार को कुछ नहिं देना ॥
बोवै बजरा आये पुख। फिर मन जिनि तुम चाहो सुख ॥
रोहिणी और मृगशिरा में मक्का, उरद और मडुआ बोने से कुछ नहीं मिलेगा। मृगशिरा में चना बोने से मालगुजारी भी नहीं दे पाओगे। पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोने से किसान सुखी नहीं होगा।

चित्रा गेहूँ आर्द्रा धान। न ओके गेरुई न ओके घाम।।
चित्रा में गेहूँ और आर्द्रा में धान बोने से गेहूँ में गेरुई और धान पर घाम का असर कम पड़ता है।

चना चित्तरा चौगुना, स्वाती जौवा होय ।
चित्रा नक्षत्र में चना और स्वाती में जौ बोने से पैदावार अच्छी होती है।

भादों मासै ऊजरी, लखौ मूल रविवार ।
तो यों भाखै भड्डुरी, साख भली निरधार ॥
यदि भादों सुदी रविवार को मूल नक्षत्र पड़े तो भड्डुरी कहते हैं कि पैदावार अच्छी होगी ।

फसल या बोरी में कीड़े

माघ सुदी जो सप्तमी, भौमवार को होय ।
तो भड्डुर जोसी कहैं, नाज किरौनो लोय ॥
यदि माघ सुदी सप्तमी को मंगलवार पड़े तो भड्डुर जोशी कहते हैं कि अन्न में कीड़े लगेंगे।

उपद्रव नाश

रवि के आगे सुरगुरु, ससी सुक्र परबेस ।
दिवस जु चौथे पाँचवें, रुधिर वहन्तो देस ॥
यदि सूर्य के आगे बृहस्पति हों और चन्द्रमा-शुक्र के घेरे में प्रवेश करें तो उसके चौथे पाँचवें दिन ही देश में रक्त की धारा बहेगी।

होली शुक्र सनीचरी, मंगलवारी होय ।
चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय ॥
यदि होली शुक्र, शनि या मंगलवार को पड़े तो भयानक समय आयेगा। विरला ही कोई जीवित रह जायेगा ।

## स्वप्न फल

प्रथम पहर को सपन फल, एक वर्ष में भास।
दूजे फल षट मास में, तीजे फल त्रय मास ॥
चौथ पहर को सपन फल, दश दिन बाद दिखात।
दिनि को सपना फल रहित, जानहु मति अवदात ॥

अर्थ- प्रथम पहर का स्वप्न १वर्ष में, द्वितीय पहर का स्वप्न ६ मास में, तृतीय पहर का स्वप्न ३मास में ऑर चतुर्थ पहर का स्वप्न १०दिन में अपना शुभाशुभ फल देता हैं। दिन का स्वप्न कोई फल नहीं देता हैं।

## ऋतू ज्ञान

सावन भादौ वरषा जान। आश्विन कातिक शरद बलान ।।
मारग पूस हेम पुनि कही। फागुन माघ शिशिर ऋतः सही ।।
ऋतु बसन्त बैशाख चैत। ग्रीषम असाढ़ जेठे कहैत ।।

अर्थ- श्रवण भाद्रपद मास में वर्षा ऋतु , अश्विन कार्तिक में शरद ऋतु , मार्गशीर्ष पौष में हेमन्त ऋतु ,माघ फाल्गुन मास में शिशिर ऋतु , चैत्र वैशाख मास में बसन्त ऋतु और ज्येष्ठ अषाढ़ मास में ग्रीष्म ऋतु रहती हैं।

## खाद्य प्रभाव

मांस खायां मांस वधे, धी खायां खोपड़ी।
दूध खायां जोर वधे, नर हरावे गोरड़ी ॥

अर्थ- मांस से मांस, घी से बुद्धि और दूध से शुक्र बल की वृद्धि होती है।

## वार विशेष

थावर कीजै थरपना। बुध कीजै व्योपार ।।

अर्थ-स्थापना करने के लिए शनिवार तथा व्यापार के लिए बुधवार अच्छे दिन समझे गये हैं।

[ पन्द्रह सौ पैंतालवे सुद बैसाख सुमेर। थावर बीज थरपियो बीके बीकानेर।। बीकानेर की स्थापना शनिवार को हुई हैं इसलिए बुजुर्गों की मान्यता रही हैं , हालांकि कुछ ज्योतिष ग्रन्थों में शनिवार को इतना प्रशस्त नहीं माना है ।]

## राम नाम

नाम चतुर्गुन न पञ्चयुत, दूने हर बसु शेष।
तुलसी सकल चराचर,रामनाम मय देख ।।

अर्थ- किसी के नाम के अक्षर को गिनकर उसे चौगुना करो , फिर उसमे पाँच जोड़ो, फिर उसे दूना करो, फिर उसे आठ से भाग दो, तो जो बचेया, वह दो होगा, और वही राम के दो अक्षर है।

## महंगाई योग

ज्येष्ठा आर्द्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माँहि ।
जो संक्रान्ति तो जानिये, महँगा अन्न बिकाहि ॥
ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा, स्वाती और श्लेषा में संक्रान्ति पड़ने पर महँगा अन्न बिकता है।

पाँच सनीचर पाँच रवि, पाँच भौम जो होय ।
छत्र टूटि धरनी परै, अन्न महँगो होय ॥
यदि एक महीने में पांच शनिवार, पांच रविवार या पांच मंगलवार हो तो राजा का नाश होगा और अन्न महँगा होगा।

माघ अँजोरी चौथको, मेह बादरो जान।
पान और नारियल तै, महँगो अवसि बखान ॥
यदि माघ सुदी चौथ को वर्षा हो तो पान और नारियल को तुम महँगा हुआ समझो।

चित्रा स्वाति विसाख हू, सावन नहि बरसंत ।
हालो अन्नै संग्रहो, दूनो मोल करंत ॥
यदि सावन के चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र में न बरसे तो जल्दी से अन्न इकट्ठा कर लो। क्योंकि भाव दूना महँगा हो जायेगा।

माघ उज्यारी तीजको, बादर बिज्जु जु देख ।
गेहूँ जौ संचय करौ, महँगा होसी पेख ॥
यदि माघ सुदी तीजको बादल और बिजली दीखे तो जौ-गेहूँ संचय कर लो क्योंकि दोनों चीजें महँगी हो जायेगी।

माघ जु परिवा ऊजरी, बादर वायु जो होय ।
तेल और सरपी सबै, दिन-दिन महँगो होय ॥
यदि माघ सुदी परिवा ( एकम ) को बदली और हवा हो तो तेल और घी दिनो दिन महँगे होते जायेंगे।

रिक्ता तिथि अक्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात ।
जो संक्रान्ति सो जानियो, संवत महँगो जात ॥
चौथ, चतुर्दसि, नौमी रिक्ता और शनिवार आदि को दोपहर या प्रातः काल में संक्रान्ति पड़ने पर वह संवत् महँगा जाता है।

## अधिकमास फल

दो आश्विन दो भादों, दो असाढ़के माँह ।
सोना चाँदी बेचिकै, नाज बिसाहो साह ॥
दो आश्विन, दो भादों या दो आषाढ़ पड़ने पर सोना चांदी बेंचकर अन्न खरीद लेना चाहिये।

## बढेरां री बाताँ ज्योतिष लोकोक्ति मुहावरे

१.आभो रातो मेह मातो ।।
लाल आकाश हो तो वर्षा होगी ।
२.आभो पीळो मेह सीलो ।।
आकाश पिला हो तो वर्षा चली जाती हैं ।
३.घड़े जिसी ठीकरी , माँ जिसी डिकरी ।।
ठीकरी में घड़े का बेटी माँ का स्वभाव होता हैं ।
४.रातो खाणो न तातो पीणों ।।
लाल (जला) भोजन गर्म पानी हानि करें ।
५.अगस्त ऊगा और मेह पूगा ।।
अगस्त्य उदय होते ही वर्षा चली जाती हैं ।
६.उदित अगस्त पंथ जल सोखा ।।
अगस्त तारा उदय से रास्तों के जल सुख जाते हैं ।
७.सो बार बाओ न एक बार खताओ ॥
एक खद देके सौ बोए तो भी धान अच्छा होता हैं।
८.पूनो पड़वा गाजै , दिन बहोतर बाजै ॥
आषाढ़ पूर्णिमा प्रतिपदा बिजली गर्ज तो ७२ दिन वर्षा या आंधी चले ।
९.सावण तो सूतो भलो, ऊभो 'भलो असाढ।।
श्रावण में सोया आषाढ़ में खड़ा चन्द्र अच्छा होता हैं।
१०.परवाई पिछ्यूँ फिरे , घर बैठी नार घड़ो भरे ॥
पूर्व के साथ पश्चिम हवा चले तो मूसलाधार वर्षा में स्त्री घर पर ही घड़ा भरे ।
११.आगे मघा पीछे भान , वर्षा होवे ओस समाव ॥
सूर्य के आगे माघ नक्षत्र हो तो कोहरे (धंवर)जैसी वर्षो होगी ।
१२.घणा जाया कुळ हाण ,घणा बरस्याँ कण हाण ।।
ज्यादा सन्तान से कुल ज्यादा वर्षा से धान की हानि होती हैं ।
१३.उल्टो गिरगिट ऊँचो चढ़े। वरखा होइ भू जल बुड़े ॥
गिरगिट(किल्डा) उल्ट वृक्ष चढ़े तो बाढ़ जैसी वर्षों हो ।
१४पाणी पीवो छाण कर , गुरु करो जाण कर ।।
पाणी को छान कर और गुरु जानकर बनावे नहीं तो रोग या राम की हानि होती हैं ।
१५.बाढ़े पूत पिता के धर्मा । खेती उपजे अपने कर्मा ॥
बेटा बाप के धर्म से खेती किसान के कर्म से बढ़ती है ।
१६.तीखो मुण्डो झबरा कान। ष्याम रंग रो ऊंट जवान ॥
तीखे मुँह झबर कान और काले रंग का ऊँट श्रेष्ठ है ।

## बढेरां री बाताँ ज्योतिष लोकोक्ति मुहावरे

१७.रोहणी तपे मिरग बाजै ,आदर खादर अळीच्यो गाज ॥
रोहिणी में गर्मी हो , मृगशीर्षा में आंधी हो तो आद्रा नक्षत्र में पकी वर्षा होगी ।

१८.कीड़ी संचै तीतर खाय । पापी को धन पड्यो रे जाय ।।
कीड़ी (चींटी) अन्न जमा करती है, तीतर उसे खा जाता है। इसी प्रकार पापी का धन दूसरे लोग उड़ा लेते हैं।

१९. सिर बड़ो सपूत रो । पग बड़ो कपूत रो ।।
विद्वान आज्ञाकारी पुत्र का सिर बड़ा होता हैं , इसके विपरीत झगड़ालू मूर्ख का पैर बड़ा है (सामुद्रिक लक्षण) ।

२०.बाभन, कुकुर, नाऊ । आपन जाति देखि सुर्राऊ ।।
ब्राह्मण कुत्ता नाई यह अपने ही जाति के सुख देख कर घूरते हैं (एकता नहीं होना और घृणास्पद लक्षण) ।

२१. गायां बायां बामणां भाग्यां ही भला।
गाय बहन ब्राह्मण के आगे भागना (सेवा करना) ही अच्छा है ।

२२. कै जागै जिकै घर में सांप । कै जाग बेटो कौ बाप ।।
या तो वह जगता है जिसके घर में साँप रहता है या वह जगता है जो लड़की का पिता है। लड़की के पिता सर्वदा चिन्तित रहना पड़ता है ।

२३. जीम र दोड़े जिके रे लारे मौत दोड़े ॥
जो भोजनोपरान्त दौड़ता है, उसके पीछे मौत दौड़ती है ।

२४. जै दिन जेठ बहे पुरवाई। ते दिन सावन धूरि उड़ाई ॥
जेठ में जितने दिन पूर्वा हवा बहेगी, सावन में उतने दिन धूज्ल उड़ेगी।

२५. माँ से पूत पिता से घोड़ । घणा नहीं तो थोड़ा थोड़ा ॥
माँ का गुण पुत्र में आता है ओर पिता का गुण घोड़े में आता है। यदि बहुत न तो कुछ तो जरूर आता ही है ।

२६.बारा कोसां बोली पलटे, वनफल पलटे पाकां ।
सौ कोसां तो साजन पलट, लखण नी पलटे लाखां ।।
बारह कोस पर बोली बदल जाती है, पकने पर वनफल बदल जाते कोस पर साजन बदल जाते हैं किन्तु लक्षण लाखों कोसों पर भी नहीं बदलते ।

२७.पान सड़ घोड़ो अड़े, विद्या बिसर ज्याय ।
रोटी जल अँगार में, कह चेला किरण वाय ।
गुरूजी फोर्यो नाहीं ।।
पान सड़ता है, घोड़ा अड़ता है, पढ़ा हुआ याद नहीं रहता, रोटी अंगारों में जलती है। हे शिष्य ! बतलायो, यह क्योंकर हुआ ? शिष्य ने उत्तर दिया, 'फेरा नहीं ।'

## राहु वास

मिगसर पोष माघ मानो । पूर्व दिशा में राहु जाणो ।।
दक्षिण दिशा करत वासा । फागण चेत बैसाख मासा।।
आषाढ सावण मास जेठा । पश्चिम दिश में राहु बैठा ।।
उत्तर दिशा रहता दिश राह । भादो आसू कार्तिक माह ।।
अर्थात :- मार्गशीर्ष-पौष-माघ में पूर्वदिशा , फाल्गुन-चैत्र-वैशाख में दक्षिण दिशा , आषाढ़-श्रावण-ज्येष्ठ में पश्चिम दिशा में , भाद्र-आश्विन-कार्तिक में उत्तर दिशा में राहु का वास होता हैं ।

## राहुमुख दृष्टि

फागण चेत वैसाख होवे । राहू दिशा नैऋत जोवे ।।
जेठ असाढ़ माह श्रावण । राहु मुख अग्न कोण ।।
भादो आसु कातिक जोय । रोहु मुख ईशान होय ।।
मिगसर पौष माघ महिणा । राहु मुख्य वायव्य कहणा ।।
अर्थात:- फाल्गुन-चैत्र-वैशाख में नैऋत्य कोण , ज्येष्ठ-आषाढ़-श्रावण में अग्नि कोण , भाद्र-आश्विन-कार्तिक में ईशान कोण , मार्गशीर्ष-पौष-माघ मास में वायव्य कोण में राहु की दृष्टि होती हैं देखता है ।

## राहुफल

गढ मढ मंदिर पोळ पदार । राहु सम्मुख करें ना द्वार ।।
जीवन जावें या निर्धन होय । इतरो फल राहु को जोय ।।
अर्थात:- महल कोटड़ी मन्दिर एवं पोळ (घर का मुख्य द्वार) राहु सन्मुख (दृष्टि) नहीं करना चाहिए , राहु सन्मुख द्वार करने से मृत्यु व धन हानि होती हैं ।

## साप्ताहिक राहुवास

रविवार राहु नैऋत बास । वार सोम को उत्तर निवास ।।
मंगलवार को अग्ने मानो । बुद्ध को पश्चिम जाणो ।।
विसपत राहू दिशा इशान । शुक्रवार को दक्षिण जान ।।
शनिवार को वायब बासा । राहु काल करे निवासा ।।
राहु सन्मुख बनावत द्वार । होवत हानि बार बार ।।
सन्मुख राहु करत विनाश। पीठ राहु वसीय वास ।।

# !! यात्रा प्रकरण !!

## छींक विचार

सनमुख छींक लड़ाई भाखै। पीठि पाछिली सुख अभिलाखै ।।
छींक दाहिनी धन को नासै। बाम छींक सुख सदा अकासै ।।
ऊँची छींक महा सुभकारी। नीची छींक महा भयकारी।।
अपनी छींक महा दुखदाई। कह भड्डुर जोसी समझाई ।।
अपनी छींक राम बन गयऊ। सीता हरन तुरंतै भयऊ ।।

अर्थात:- यदि छींक सामने होती है तो लड़ाई होगी, पीठ पीछे हो तो सुख देगी, दाहिने तरफ की छींक धन का नाश करती है और बाईं ओर की छींक सदैव सुख प्रदान करती है। यदि छींक जोर से होती है तो शुभ होती है, हलकी होती है तो भय उत्पन्न करती है। अपनी छींक अत्यधिक दुःख प्रदान करती है यह भड्डुरी जोशी समझा कर कहते हैं। राम का वनगमन उनकी अपनी ही छींक पर हुआ था और इसी के कारण वहाँ सीता का भी तुरन्त हरण हो गया।

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान ॥
एक सूद्र दो बैस असार। तीनि विप्र औ छत्री चार ॥
सनमुख आवैं जो नौ नार। कहैं भड्डुरी असुभ विचार ॥

अर्थात् भड्डुरी कहते हैं कि यात्रापर निकलते समय यदि घरके बाहर कुत्ता खड़ा कान फटफटा रहा हो तो अशुभ होता है। यदि सामनेसे एक शूद्र, दो वैश्य, तीन ब्राह्मण, चार क्षत्रिय और नौ स्त्रियाँ आ रही हों तो अशुभ होता है।

चालतो सर्प जीवणो, धावत छतर धार।
ईच्छा मन मोकली, शुभ होवत श्रीकार ।।

अर्थात:- दाएं हाथ की तरफ छात्र धारी सर्प दर्शन होने से यात्रा सफल होती हैं ।

समुख डावा होवे सर्प अशुभ सुगन अष जाण।
ओछा सुगन पनंग रा, अबखी घटसी आण।।

अर्थात:- सन्मुख व बाएं हाथ की तरफ सर्प दिखने से यात्रा में हानि होती हैं ।

मैना बोले मार्ग मे, जीवणी भली जाण।
सामे शुभ न सांगाणी, पीठ मिलावत आण।।

अर्थात:- यात्रा में मैना(कोयल) बोलने से बाएं हाथ शुभ सन्मुख अशुभ व पीठ पीछे शुभ होती हैं ।

कुम्भ करीया कोचरी, विषधर औ वराहा ।
इतरा लीजे जीवणा, दूजा सबै डावा ।।

अर्थात:- घड़ा ऊँट उल्लू सर्प सुअर आदि पशुओं को दाएं हाथ और बाकी बाएं करके यात्रा करनी चाहिए ।

# !! यात्रा प्रकरण !!

चलत समय नेउरा मिलि जाय। बाम भाग चारा चखु खाय ॥
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समझहु भाय ॥
अर्थात् यदि कहीं जाते समय रास्तेमें नेवला मिल जाय, नीलकण्ठ बायीं ओर चारा खा रहा हो और दाहिने ओर खेतमें कौवा हो तो जिस कार्यसे व्यक्ति निकला है, वह अवश्य सिद्ध होगा।

होवत हेलो पीठ में, सम्मुख विदवा नार।
इण सूगनों सूं निकरे, देखें जम का द्वार।।
खर डावो विष जीवणो, मुर्दा लीजे पूंठ।
इण सूगना में जो चले , लावें लक्ष्मी लूट ।।
अर्थात:- जाता को पीछे से बुलाना , सन्मुख विधवा स्त्री मिलना यात्रा में मृत्युतुल्य अपशकुन हैं । गधा बाएं सर्प दाएं शवयात्रा पीठ पीछे ऐसा शकुन यात्रा में लक्ष्मी वृद्धि कारक हैं ।

## योगनी विचार

डावी जोगण सुख देत पीठ पूंजी होत।
जीवणी जोगण धन हरे सम्मुख जोगण मौत।।

## चन्द्रमा की दिशा शुभाशुभ फल

मेष सिंह धनु पूरब चन्दा। दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा ॥
पश्चिम कुम्भ तुला अरु मिथुना। उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥'
अर्थात् मेष, सिंह और धनुराशिका चन्द्रमा पूर्वमें, वृष, कन्या और मकरराशिका दक्षिणमें, मिथुन, तुला और कुम्भका पश्चिममें, कर्क, वृश्चिक, मीनका चन्द्रमा उत्तरमें रहता है ।

यात्रामें चन्द्रमा सम्मुख या दाहिने शुभ होता है। पीछे होनेसे मरणतुल्य कष्ट और बायीं ओर होनेसे धनहानि होती है।

## कक्कड़ा योग निषिद्ध यात्रा

छठ तिथी न शनिवार, सातम शुक्र शूभ नहीं।
अष्ट अशुभ गुरुवार, मीले बुध नवमी महीं।।
दशमी मंगल दोष, सतो है सोम ग्यारस ।
कक्कड़ जोग कहाय, रवी जे आवत बारस ।।
भगवान कवि जोतक भणे, पुछे जाने पालिए ।
हजारों काम होय पण, दसो दिस नह चालिए।।

# !! यात्रा प्रकरण !!

तिथि यात्रा विचार

पेंडे तो पड़वा भली, दूजां सिद्धी दाय।
तीज आरोग दायनी, चोवथ कलह कराय।।
पांचम तिथ धन दिलावें, छष्ठी कलह कुयोग।
भल सातम भोजन पावें, आठम आवे रोग।।
नवम् यात्रा नाश करें, दशमी लाभ दिलाय।
ग्यारस स्वर्ग दायिनी, बारस प्राण नशाय ।।
तेरस सिद्धी दें तवा चवदश चोर लुटाय।
अमास पुनम गमन नहीं, तिथि वेद बताय ।।

पुरुब गुधूली पश्चिम प्रात। उत्तर दुपहर दक्खिन रात ॥
का करै भद्रा का दिगसूल। कहैं भड्डर सब चकनाचूर ॥
अर्थात् भड्डरी कहते हैं कि यदि पूर्व दिशामें यात्रा करनी हो तो गोधूलि (सन्ध्या) के समय, यदि पश्चिममें यात्रा करनी हो तो प्रातःकाल यदि उत्तर दिशामें यात्रा करनी हो तो दोपहरमें और यदि दक्षिणकी ओर जाना है तो रातमें निकलना चाहिये। यदि उस दिन भद्रा या दिशाशूल भी है तो ऐसा करनेवाले व्यक्तिको कुछ भी नहीं होगा।

सूके सोमे बुधे बाम। यहि स्वर लंका जीते राम ॥
जो स्वर चले सोई पग दीजै। काहे क पण्डित पत्रा लीजै ॥
अर्थात् शुक्रवार, सोमवार और बुधवारको बायें स्वरमें कार्य प्रारम्भ करनेसे सफलता मिलती है। रामने इसी स्वरमें लंका जीती थी। यदि बायाँ स्वर चले तो बायाँ पैर आगे निकालना चाहिये।
दाहिना चले तो दाहिना पैर आगे निकालना चाहिये। इससे कार्य सिद्ध होता है। ऐसा करनेवाले व्यक्तिको पंचांगमें विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है।

सोम सज्जन न भेजिए, बिसस्त को घरनार।
बुध बेटी न भेजिए , प्रभु हाथ पतवार ।।
अर्थात:- दामाद या रिश्तेदार को सोमवार को , घर की बहू को गुरुवार को एवं बेटी को बुधवार को विदा नहीं करना चाहिए ।

सूखा लकड़ा सामने, खुले केशां नार।
इण सूगने निकळै , क्या करें किरतार।।

## शयन सिर विचार

घर पूरब पेंडे पश्चिम, दक्षिण राज द्वार।
उत्तर मस्तिष्क नह किजिए, होवे अणचिति हार ।।
अर्थात:- पूर्व सिर करके सोवे यात्रा में पश्चिम
सुनी तिथि विचार राजा के घर दक्षिण सिर करके सोना चाहिए परंतु
उत्तर सिर सोने से आयु बल बुद्धि का नाश होता है ।

## सुनी तिथि विचार

शुन तिथि में जो करें खेती और विवाह।
धरती धान ना निपजे, विवाह बालक चाह।।
अर्थात:- सुनी तिथि में खेती करने से धान नहीं होता हैं और विवाह करने
से सन्तान नहीं होती हैं ।

## कुलक योग

पड़वा थावर पर हरो बिज भृगावार ।
तिज सुरगुरु चढीये चौथ बुधवार ।।
पांचू भौम छठ सोम सातयु तिथि भाण ।
मुर्हत मत दो जोशीजी कुलक जोग प्रवाण ।।
अर्थात:- प्रतिपदा शनि , द्वितीया शुक्र , तृतीया गुरु , चतुर्थी बुध , पञ्चमी
मङ्गल , षष्ठी सोम , सप्तमी रविवार में होने से अनिष्टकारी कुलिक
नामक योग होता हैं ।

## बच्चों का उपचार

बूंद चार गौ घृत री, सुंडी सूते डार।
शशा करें ना शया पर, ओखद गुण हजार।।
अर्थात:- यदि कोई ३ साल से ऊपर का बालक शया पर लघुशंका करता
हो तो भारतीय वैदलक्षणा गौमाता का घी रात्रि में चार बून्द नाभि में
डालने से निद्रा में मूत्र नहीं करते ।

## नवीन वस्त्र धारण

कपड़ा पहिरै तीनि बार। बुध बृहस्पत सुक्रवार।
हारे अबरे इतवार। भड्डुर का है यही बिचार ॥
अर्थात् वस्त्र धारण करनेके लिये बुध, बृहस्पति और शुक्रवारका दिन विशेष
शुभ होता है। अधिक आवश्यकता पड़नेपर रविवारको भी वस्त्र धारण किया
जा सकता है, ऐसा भड्डुरीका विचार है।

## छींक फल

सम्मुख  छिक दुख प्रकासे। पीठ पीछे सुख प्रकासे ।।
खुद की छीक महा भयंकारी। आपती काल परखिए चारी ।।
छिंकत खावें छिंकत पीए, छिंकत रहीये सोय।
छींकत पर घर जावणी, कबहु भलों नी होय ।।
नूतन बस्तर पहनते, छींक सदा सुखकार।
स्नान अन्त छींक अरी, करती कष्ट अपार ।।

## छिपकली या गिरगिट गिरने का फल

पड़े छिपकरी अंग पर कर काँटा चढ़ि जाय।
तिथि और वार नक्षत्र कर इनको फल दरसाय ॥
पड़िवा पड़ै जो छिपकली सरट चढ़े जो अंग।
रोग बढ़ावें वेग हो, करे शक्ति को भंग ॥
दुतिया में दे राज घनेरा। त्रितिया द्रव्य लाभ बहुतेरा ॥
दुक्ख चतुर्थी मोहि बरवानी। पंचम छट्टि दई धन धानी ॥
सप्तम अष्टम नौमी दसमीं। मरिवे नाहि तो आवे करमीं ॥
एकादशी पुत्र को लावै। करै द्वादशी द्रव्य उछावै ।।
त्रयोदसी दे सबही सिद्धि। चतुर्दशी में नासै  ऋद्धि ॥

## कुत्ता नक्षत्र फल

भरणि बिसाखा कृत्तिका, आद्रा मघा मूल।
इनमें काटै कूकुरा, भड्डर है प्रतिकूल ॥
अर्थात् भड्डरीका कहना है कि यदि भरणी, विशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रोंमें कुत्ता काट ले तो बहुत अनिष्टकारी होता है।

## वैदलक्षणा गौमाता चमत्कार

गाय दुहे, बिन छाने लावै, गरमा गरम तुरंत चढ़ावै।
बाढ़े बल अउर बुद्धि भाई, घाघ कहे सच्ची बतलाई ।।
अर्थात् घाघका कहना है कि गायको दूहकर उसी समय बिना छाने गरमागरम कच्चा दूध पीनेसे बल और बुद्धि दोनों बढ़ती हैं।

## वर्ष का राजा

बिजै दसैं जो बारो होई। संवतसर को राजा सोई ।।
विजयदशमी के दिन जो वार पड़ेगा, वही संवत्सर का राजा होगा, जैसे मंगलवार को हो तो राजा मंगल होगा।

जो चित्रा में खेलै गाई। निहचै खाली साख न जाई ॥
अर्थात् यदि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा-गोवर्धनपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ाके दिन चित्रा नक्षत्रमें चन्द्रमा हो तो फसल अच्छी होती है।

## नीव भूमि पूजन

वायु भलो वैसाख में महीना फागण चेत ।
सावण शुभ जेठ असाढे, नैऋत नींव देत ।।
आसु काति कुण अगन, भाद्रवे सूं भाष।
मिगर पो नींव माघ दे, इशान पूरे आष ।।

मीन मन्दिर मकर सरोवर । बर्ख वेदी छाय सिंह से घर बार ।।
आद कूंट अग्नि की लीजै । तीन तीन मास ज्ञान कीरिजै ।
अर्थात:- नीव खात खूँटी के लिए सभी को अग्नि कोण से ३-३ राशि गणना करे मीन से मन्दिर की , मकर से सरोवर कुआ बावड़ी तलाई कुण्डी की , वृषभ से विवाह की , सिंह से घर की पाया जानना चाहिए ।

## चन्द्रग्रहण

मास ऋष्य जो तीज अँध्यारी, लेहु जोतिसी ताहि विचारी।
तिहि नक्षत्र जो पूरनमासी, निहचै चन्द्रग्रहन उपजासी ।।
महीने की कृष्ण पक्ष की तृतीया को कौन सा नक्षत्र है ज्योतिष से इसका विचार कर लेना चाहिए। यदि उसी नक्षत्र में पूर्णिमा पड़े तो निश्चय ही चन्द्र ग्रहण होगा।

## मास वार फल

पाँच सनीचर पाँच रवि, पाँच मंगर जो होय।
छत्र टूट धरनी परै, अन्न महँगो होय ॥
अर्थात् भड्डुरी कहते हैं कि यदि एक महीनेमें पाँच शनिवार, पाँच रविवार और पाँच मंगलवार पड़ें तो महा अशुभ होता है। यदि ऐसा होता है तो या तो राजाका नाश होगा या अन्न महँगा होगा।

## संक्रांति फल

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्रान्ति सो जानियो, संबत महँगो जात ।।
रिक्ता (चौथ, नवमी और चतुर्दशी) तिथि और क्रूर दिन (जैसे शनि-मंगल) को यदि दोपहर या प्रातः काल में संक्रान्ति पड़े तो समझना चाहिए कि संवत् महँगा जायेगा। अर्थात् वर्ष भर महँगाई रहेगी।

## नरसंहार योग

मीन शनि, भौम तुल, कर्क बृहस्पति होय।
डंक कहवे सुण भड्डुली विरला जीवे कोय ॥
अर्थात् मीनराशिपर जब शनि संक्रमण करता हो और तुलाराशिमें मंगल तथा कर्कराशिमें गुरु ग्रह संक्रमण करते हैं तो डंक कविने भड्डुली नामक कन्याको सम्बोधित करते हुए कहा है कि संसारमें ऐसे वक्तमें कोई विरला ही जीता है अर्थात् प्रचुर मात्रामें नरसंहार होता है। यह योग सन् १९६५ ई० में आया था, जिसमें नरसंहार पर्याप्त हुआ। यह सर्वविदित है।

### ज्येष्ठ प्रतिपदा फल

जेठ आगली परवा देखू। कौन बासरा है यों पेखू ।।
रबिबासर अति बाढ़ बढ़ाव। मंगलवारी ब्याधि बताय ।।
बुधा नाज महँगा जो करई। सनिवासर परजा परिहरई ।।
चन्द्र सुक्र सुरगुरु के बारा। होय तो अन्न भरो संसारा ।।

अर्थात:- यदि ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को रविवार पड़े तो बाढ़ आयेगी, मंगल पड़े तो रोग बढ़ेंगे, बुध पड़े तो अन्न महँगा होगा, शनि पड़े तो प्रजा को कष्ट होगा, यदि सोम शुक्र और वृहस्पति पड़े तो संसार अन्न से भर जायेगा।

### आषाढ़ बदी नवमी फल

न गिनु तीनि सै साठ दिन, ना कर लग्न बिचार।
गिनु नौमी आषाढ़ बदि, होवै कौनउ बार।।
रबि अकाल मंगल जग डगै, बुधा समो सम भावो लगै।
सोम सुक्र सुरगुरु जो होय, पुहुमी फूल फलन्ती जोय ।।

अर्थात:- भड्डुरी कहते हैं कि न तो तीन सौ साठ दिनों की गिनती करो, न ही लग्न विचारो। सिर्फ आषाढ़ कृष्ण नवमी का विचार करो, वह चाहे जिस दिन पड़े। यदि रविवार को हो तो अकाल पड़ेगा, मंगलवार को हो तो जग कांप उठेगा, बुधवार को हो तो समभाव रहेगा, सोमवार, शुक्रवार और वृहस्पतिवार को हो तो पृथ्वी फूले फलेगी

### अनिष्टकारी योग

आखातीज रोहिनी न होई। पौष, अमावस मूल न जोई ॥
राखी श्रवणो हीन विचारो । कातिक पूनों कृतिका टारो ॥
महि-माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डुरी सालि बिनासै ॥

अर्थात् भड्डुरी कहते हैं कि वैशाख अक्षय तृतीयाको यदि रोहिणी नक्षत्र न पड़े, पौषकी अमावास्याको यदि मूल नक्षत्र न पड़े, सावनकी पूर्णमासीको यदि श्रवण नक्षत्र न पड़े, कार्तिककी पूर्णमासीको यदि कृत्तिका नक्षत्र न पड़े तो समझ लेना चाहिये कि धरतीपर दुष्टोंका बल बढ़ेगा और धानकी उपज नष्ट होगी।

### द्वितीया तिथि योग

अद्रा भद्रा कृत्तिका, असरेखा जो मघाहिं ।
चन्दा ऊगै दूज को, सुख से नरा अघाहिं ॥
अर्थात् द्वितीयाका चन्द्रमा यदि आर्द्रा भाद्रपद कृत्तिका, आश्लेषा का मघामें उदित हो तो मनुष्यों को असीम सुख होगा ।

### रविवार निन्द्य

आदित घर आतरे तेल नारी मद मांस ।
दालद बुलावे देखता अणुत गरीबी आस ।।

शुभाशुभ बैल (बळद)

करिया काछी धौरा बान।
इन्हें छाँड़ि जनि बेसह्यो आन ।।
किसान को बैल खरीदते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि या तो वह सफेद रंग का हो या फिर काली कच्छ (पूँछ के नीचे का भाग) वाला हो।

कार कछौटी झबरें कान।
इन्हें छाँड़ि जनि लीजौ आनि ।।
कृषक को काले कच्छ और झबरे कान वाले बैल को छोड़ कर दूसरा नहीं खरीदना चाहिए।

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ । सद्दर कहै गुसैयें खाऊँ ।।
नौदर कहै में नौ दिस धाऊँ । हित कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ ।।
घाघ कहते हैं कि जिस बैल के छः दाँत होते हैं वह कहीं ठहरता नहीं, सात दाँत वाला मालिक को ही खा जाता है और नौ दाँत वाला नौ दिशाओं में दौड़ता है एवं किसान के मित्र, कुटुम्बी और पुरोहित को खा जाता हैं।

बरद बेसाहन जाओ कंता।
कबरा का जनि देखो दन्ता ।।
भावार्थ - हे स्वामी ! बैल खरीदने जाना तो चितकबरे बैल का दांत न देखना अर्थात् न खरीदना।

होली वार फल

होली सूक सनीचरी, मंगलवारी होय।
चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय ।।
भावार्थ -यदि होली शुक्र, शनि और मंगल को पड़े तो पृथ्वी पर भयानक समय आने वाला है और शायद ही कोई बचे मतलब जनमानस में रोग कलह दुर्घटना दंगे बढेगें ।

पौष अमावस्या फल

सोम सुकर सुरगुरु दिवस, पूस अमावस होय ।
घर घर बजी बधाबड़ा, दुःखी न दीखै कोय ॥
अर्थात् पूसकी अमावास्याको यदि सोमवार, बृहस्पतिवार या शुक्रवार पड़े तो शुभ होता है और हर जगह बधाई बजेगी तथा कोई भी आदमी दुःखी नहीं रहेगा।

स्वास्थ्य विचार

खाइ के मूतै सूतै बाउँ। काहै के बैद बसावै गाउँ।
यदि व्यक्ति खाना खाने के पश्चत् पेशाब करके बायें करवट सो जाए, तो उसे अपने गाँव में वैद्य बसाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी अर्थात् ऐसा करने वाला व्यक्ति सदैव स्वस्थ रहता है।

## गर्भस्थ प्रश्न

| | | |
|---|---|---|
| रवि | चन्द्र | मङ्गल |
| बुध | गुरु | शुक्र |
| ❁ | शनि | ❁ |

रवि गुरु मङ्गल सुत उत्पन्ना । सोम शुक्र बुध जाने कन्या ।।
शनि का गर्भ गलित करि डारी । कहें व्यास यह प्रश्न विचारी ।।

किसी के गर्भ में पुत्र है या कन्या है, यदि इसकी परीक्षा करनी हो तो ऊपर के चक्र में हाथ रखकर अक्षर देख के विचार ले। इस प्रकार से कि रवि मंगल गुरु इन तीनों में से किस कोष्ठी में हस्त पड़े तो अवश्य पुत्र होगा। चंन्द्र, बुध, शुक्र इनमें कर पड़े तो समझना कि कन्या होगी। शनि के कोठे में कर पड़े तो गर्भ गिर जायगा। यह व्यासजी का कथन है।

ग्रहण देखना

चन्द्र से रवि सातवें, रवि राहु एकन्त ।
पूनों में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़न्तं ।।
रवि से राहु सातवें, शशि रवि हो एकन्त ।
मावस में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पहन्त ।।

चन्द्र से सूर्य सप्तम हो रवि राहु युत हो पूर्णिमा में प्रतिपदा की सन्धि हो तो चन्द्रग्रहंण होता हैं । और सूर्य से राहु सप्तम हो सूर्यचन्द्र युत हो अमावस्या में शुक्ल प्रतिपदा की सन्धि हो तो सूर्यग्रहण होता हैं

जिहि नक्षत्र में रबि तपै, तिहीं अमावस होय।
परिवा साँझी जो मिले, सूर्य ग्रहण तब होय ।।

सूर्य जिस नक्षत्र में होता है उसी में अमावस्या होती है, शाम को यदि प्रतिपदा हो तो सूर्यग्रहण अवश्य होगा।

तेरह दिन का देखी पाख। अन्न महँग समझो बैशाख ।।

भावार्थ यदि पक्ष तेरह दिन का होगा तो बैशाख में अन्न महँगा बिकेगा।
(महाभारत में लिखा ऐसा योग राष्ट्र में अनिष्ट करता हैं)

### कृषि महिमा

उत्तम खेती मध्यम बान। निषिद चाकरी भीख निदान ।।
अर्थ- खेती का पेशा सबसे अच्छा है। वाणिज्य (व्यापार) मध्यम और नौकरी निषिद्ध है। और भीख माँगना तो सबसे बुरा है।

### वर्षा विशेष

चैत चिड़पड़ा। सावन निरमला ।।
अर्थ- यदि चैत्र में बुन्दा बांदी (टपूकड़ा) गिरें, तो सावन में वर्षा नहीं होगी।

चैत मास नै पख अँधियारा। आठम चौदस दो दिन सारा ॥
जिण दिस बायरो जिण दिस मेह। जिण दिस निरमल जिण दिस खेह ।।
अर्थ- चैत्र के कृष्णपक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को जिस दिशा में बादल होंगे, उस दिशा में बरसात में वर्षा अच्छी होगी, और जिस दिशा में बादल न होंगे, उस दिशा में धूल उड़ेगी।

बरसे भरणी। छोड़े परणी ।।
रोहणी रोली। रुपया री अधेली ।।
अर्थ- यदि भरणी नक्षत्र में बरसात हो, तो परणी को छोड़ना पड़ेगा। अर्थात् विदेश जाना पड़ेगा। रोहिणी में वर्षा हो, तो फ़सल रुपये की अठन्नी भर रह जायगी।

पहली रोहिण जल हरै, बीजी बहोतर खाय।
तीजी रोहिण तिण करै, चौथी समन्दर जाय ।।
अर्थ- यदि पहली रोहिणी में वर्षा हो, तो अकाल पड़े; दूसरी में बहत्तर दिन तक सूखा पड़े; तीसरी में घास न उगे और चौथी में मूसलधार वर्षा हो।

एक मास ऋतु आगे धावै। आधा जेठ असाढ़ कहावै ॥
अर्थ- मौसम एक महीना आगे चलता है। आधे जेठ ही से आषाढ़ समझना चाहिये और खेती की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिये।

### धरती की औषधि

गोबर मैला नीम की खली। यासे खेती दूणी फळी ॥
अर्थ- गोबर, सड़ी खाद और नीम की खाद बिखेरने से खेती की उपज दुगनी हो जाती है।

जिण रे खेत में पड़यो कोनी गौबर।
उण किसान री राम ने लेव खबर ॥
अर्थ- जिसके खेत में गाय के गोबर की खाद नहीं पड़ती उस किसान की भगवान भी खबर नहीं लेते हैं। भावार्थ हैं धान की उपज घट जाती हैं।

आसाढ में खाद खेत को जावे । जद मूठी भर दाना पावे ॥
अर्थ- आसाढ लगत ही खेत में खाद डाल दिया जाए तो मनचाही खेती होती हैं।

गुंवार रा पता खेत में छोड़े । तो मन चाही सिट्टी तोड़े ॥
अर्थ- यदि ग्वार के पतों की खाद खेत में दी जाए तो बाजरी की उपज अच्छी होती हैं।

खाद कूड़ा ना टलै, करम लिख्या टळ जाय ।
रहीमन कहत बनाय के, देवो पास बनाया ।
अर्थ- रहीम कहते है कि भाग में लिखा टल सकता है पर गौबर ग्वार का कचरे की खाद दिया खेत खाली नहीं जाता हैं।

### बिजाई मुहूर्त

अद्रा धान पुनर्वसु पैया। गया किसान जो वोवै चिरैया ।।
अर्थ- आद्रा में धान बोना चाहिये। पुनर्वसु में बोने से केवल पैया (बिना चावल का धान) हाथ आयेगा। और पुष्य में बोने से कुछ न होगा।

पुक्ख पुनर्वस बोवै धान । असलेखा मक्का परमान ॥
अर्थ- पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में धान बोना चाहिये और अश्लेषा में मक्का ।

हस्त न बाजरी चित्र न चना। स्वाति न गोहूँ बिसाख न धना ॥
अर्थ- हस्त में बाजरी(जेष्ठ की बाजरी बड़े बेटे के समान होती हैं), चित्रा में चना, स्वाती में गेहूं और विशाखा में धान न बोना चाहिये ।

आधे हस्त मूरि मुराई ॥ आधे हस्त सरसों राई ।।
अर्थ- हस्त नक्षत्र के प्रारम्भ में मूली और नक्षत्रान्त में सरसों और राई आदि बोना चाहिये ।

पुरबा में जिन रोपो भइया । एक धान में सोलह पड्या ।।
अर्थ- हे भाई ! पूर्वा नक्षत्र में धान न रोपना; नहीं तो एक धान में सोलह पैसा होंगी ।

### बिजाई कटाई मुहूर्त

बुध बृहस्पति दो भलो, सुक्र न भले बखान ।
रवि मंगल बौनी करै, द्वार न आवै धान ॥
अर्थ- बोने के लिये बुध-वृहस्पति दो दिन अच्छे हैं। शुक्र अच्छा नहीं है। रविवार और मंगलवार को बोने से अन्न लौट कर घर नहीं आता ।

बुध बावणी । सुक्र लावणी ।।
अर्थ- बुध को बोना चाहिये और शुक्र को काटना ।

बाजरे की महिमा
उठके बजरा यों हँस बोले । खाये बूढ़ जुवा होले ।।
अर्थ- बाजरा ने उठकर कहा कि मुझे यदि बुड्ढा भी खाय तो जवान हो जाय ।

सर्दी विचार
जै दिन भादों बहे पछार । तै दिन पूस में पड़े तुसार ॥
अर्थ- भादौं के महीने में जितने दिन पश्चिम हवा बहेगी, उतने दिन पौष में पाला (सर्दी) पड़ेगा ।

पाणी पाळा बादसा । आवे उत्तर दिशा ।
अर्थ- पानी, पाला (सर्दी) और बादशाह उत्तर दिशा की हवा से ही आया करते हैं ।

वायु विचार
दखनी कुलखनी । माघ पूस सुलखनी ।।
अर्थ- दक्षिण की हवा आम तौर पर खराब होती है; पर माघ पौष में अच्छी होती है।

मच्छर उत्पत्ति
मघा में मकर पुरबा डाँस । उत्तरा में हुवे सब का नास ॥
अर्थ- मघा नक्षत्र में मकड़ा-मकड़ी और पूर्वा में डाँस पैदा होते हैं और उत्तरा में सब नष्ट हो जाते हैं।

दीपावली फल
मंगलवारी होय दिवारी। हँसैं किसान रोवें बैपारी ॥
अर्थ- यदि दीवाली मंगल को पड़े, तो किसान हँसेगा और व्यापारी रोयेगा । धान अधिक भाव कम होगा ।

कार्तिक अमावस्या फल
कातिक मावस देखो जोसी । रवि सनि भौमवार जो होसी ॥
स्वाति नखत अरु आयुष जोगा। काल पड़े अरु नासै लोगा ॥
अर्थ- ज्योतिषीयों को कार्तिक अमावास्या को देखना चाहिये, यदि उस दिन रविवार, शनिवार और मङ्गलवार होगा और स्वाती नक्षत्र और आयुष्य योग होगा तो अकाल पड़ेगा और मनुष्यों का नाश होगा ।

### फाल्गुन मासान्त विचार

मंगल पड़े तो भू चलै, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहचै पड़े अकाल ।।

अर्थ- यदि फागुन महीने का अंतिम दिन मङ्गल को पड़े, तो भूकंप हो; बुध को पड़े तो कुछ अकाल हो ; और यदि शनैश्चर वार को पड़े, तो निश्चय ही अकाल पड़े ।

### ज्येष्ठ फल

जेठ मूँगा। सदा सूँगा ।।
यदि जेठ में अन्न महँगा हो, तो वर्ष भर सस्ता ही रहेगा

### आषाढ़ सुनमी फल

आसाढ़े सुद नवमी, न बादल न बीज ।
हल फ़ाड़ो ईंधन करो, बैठा चाबो बीज ॥

अर्थ- आषाढ़ सुदी नवमी को यदि बादल और बिजली न हो, तो हल को तोड़कर जला दो और बैठे-बैठे बीज को ही खाओ । क्योंकि वर्षा नहीं होगी। (भडली का यह वचन इतना सिद्ध हैं कि आज भी आषाढ़ शुदी नवमी को भडली नवमी कहा जाता हैं।)

### चूल्हा मुहूर्त

रवि शनि मंगल को हरो और बार लो जोड़ ।
रिक्ता भद्रा छोड़ के चूल्हे को दो ठोड़ ॥

अर्थ- रविवार मंगल शनि को छोड़कर रिक्ता भद्रा त्याग के चूल्हा बनना चाहिए ।
( ज्योतिष ग्रन्थों में चूल्हे के लिए सोमवार को भी निषेध किया है पं. श्रीराधे जोशी )

### शकुन फल

बिना तिलक का पाँडिया, बिना पुरुष की नार ।
बायें भले न दाये, सीन्यौं सर्प सुनार ।।

अर्थ- यात्रा के समय बिना तिलक का ब्राह्मण, विधवा स्त्री, दर्जी, साँप और सुनार न दाहिने अच्छे हैं, न बाये ।

### यात्रा प्रस्थाना विचार

रबिदिन बास चमार घर, ससि दिन नाई गेह ।
मंगल दिन काछी भवन, बुध दिन रजक सनेह ।।
गुरु दिन ब्राह्मण के बसै, भृगु दिन वैश्य मंझार ।
सनि दिन वैश्या के बसै, भड्डर कहें विचार ।।

अर्थ - भड्डुरी कहते हैं कि रविवार को चमार के घर, सोमवार को नाई के घर, मंगल को काछी के घर, बुध को धोबी के घर, वृहस्पति को ब्राह्मण के घर, शुक्रवार को वैश्य के घर और शनिवार को वेश्या के घर प्रस्थान रखना चाहिये ।

## विषकन्या योग

रवि गुरु मङ्गल ईक रेखा। कृतिका भरनी और असलेखा।।
दूज सातम आठ्यूँ जीया। तामें भई विष कन्या किया॥

अर्थ- रविवार, गुरुवार या मंगलवार को कृतिका, भरणी आश्लेषा नक्षत्र हो दूज, सप्तमी या अष्टमी तिथि पड़े तो ऐसे योग में उत्पन्न होनेवाली विषकन्या होती है।

## विषकन्या फल

आप मरे या माता खाय। धन नासै जो पर घर जाय।।
दाईन जो नरकटिया करै। जेठे पुत्र बहू बाँको मरै॥
नाईन सैर कमावे जोय। बरिस दिना रोजी को खोय।।
ब्रह्मा बिसनू उत्तर के आवे। भाँवर पड़त रांड हो जावे॥

अर्थ- या तो वह स्वयं मर जाती है या माता जन्म देकर मर जाती है। जीवे तो पति के धन का नाश करती है। ऐसी कन्या का नालोच्छेदन करनेवाली दाईण का बड़ा बेटा मरता है। शादी में काम करने वाली नाईन साल भर में अपनी रोजी से हाथ धो बैठती है। विवाह के समय भाँवर पड़ते ही ऐसी कन्याएँ विधवा हो जाती हैं। स्वयं भगवान् ब्रह्मा, विष्णु भी इस योग को नहीं टाल सकते।

## सुनी तिथि फल

पड़वा मूल, पञ्चमी भरनी। छठ के आद्रा नौमी रोहिनी।
अष्टमी हस्त नखत वरनी।।
सप्तमी मघा री विचारो भाई। छहो शून्य पड़ी ह्वै जाई।।
जनमें सो जीवे नहीं, बसे तो उजड़ होय।
समर चढ़े विजय नहिं, धरती अन्न खोय।।
कुआँ पोखर जो कोई खन्नै, वारि बिना हो जावे सुन्नै।।

अर्थ:- प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, छठ को आर्द्रा, नौमी को रोहिणी, अष्टमी को हस्त, सप्तमी को मघा यह छः तिथियाँ सुनी (सुसुप्त) हैं अतः कुछ कार्यों के लिए वर्जित है। इन तिथियों और योगों में पैदा होने वाला बालक काल-कलित हो जाता है। किसी जगह जाकर बसने वाला बर्बाद होता है। युद्ध करने से हार होती है। खेती करने से पैदावार नहीं होती। कुआँ-तालाब आदि खोदने से जल विहीन होता है।
(नॉट- पेज . ३१ के दूसरे दोहे का फल भी यही घटित होता है।)

## रोग फैलना

असलेखा बरसावणा। बैदा घरे बधावणा।

अर्थ- अश्लेषा में वर्षा हो, तो वैद्यों के घर बधाई बजे अर्थात् रोग खूब फैलेगा।

## आरोग्य विचार

प्रातकाल खटिया ते उठि कै पिअइ तुरंतै पानी ।
कबहूँ घर में बैद न अइहें बात घाघ ये जानी ॥
अर्थ- प्रातःकाल खाट पर से उठते ही तुरन्त पानी पी लिया करे तो कभी बीमार न हो। यह बात घाघ की अजमाई हुई है।

## गंगा व गुड़ नैवेद्य महत्व

गंगा जिण थानक गई, सुणियो तीरथ सोय ।
तीरथ होय न गंग विन, गुड़ बिन चौथ न होय ।।
अर्थ- जिस स्थान पर गंगा पहुंच गई, वही तीर्थस्थल वन गया । जिस प्रकार गुड के बिना चौथ का त्यौहार नही हो सकता, उसी प्रकार गंगा के बिना कोई स्थल तीर्थ नही बन सकता ।

## बीकानेर महिमा

ऊँट मिठाई इस्त्री, सोनो गहणो शाहा।
पांच चीज पृथ्वी सिरै, वाहा बीकाणा बाहा ॥
अर्थ- ऊँट, मिठाई, लुगाई, सोने रो गहणो और साहुकार यह पांच चीज सारे संसार में बीकानेर के अच्छे होते है। इसलिए बीकानेर ने वाह वाह है।

मारवाड़ नर नीपजै, नारी जेसलमेर ।
तूरी तो सिंधा सांतरा, करहल बीकानेर ।
अर्थ- मारवाड़ में मनुष्य, जेसलमेर की नारी, सिन्ध का घोड़ा और ऊंट बीकानेर का सबसे अच्छे होते है।

## वर्षा व पशु रोग

आगे रवि पीछे चलै, मंगल जो आसाढ ।
तो बरसै अनमोलही, पृथ्वी अनंदै बाढ ।।
अर्थ- आषाढ़ मास के गौचर में यदि सूर्य आगे और मंगल पीछे चले तो सुवाली अधिक वर्षा होगी । (इसके विपरीत मंगल के पीछे सूर्य गौचर करे तो पशुओं में रोग ओर मृत्यु व्यापे - पं राधे जोशी)

## चन्द्र फल

जाड़े में सूतो भलो , बैठो वर्षा काल ।
गरमी में ऊभो भलो , चोखो करै सुकाल ॥
अर्थ- द्वितीया का चन्द्रमा सर्दी में सोया हुआ , वर्षा ऋतु में बैठा हुआ , और ग्रीष्म ऋतु में खड़ा हुआ शुभ माना गया है ।

## अनुभूत योग

शुकर केरी बादळी, रहे शनिश्चर छाय ।
सहदेव कैव भड्डुरी, बिन बरसे न जाय ॥
अर्थ - यदि शुक्रवार को बादल छाए और शनिवार तक रहें तो सहदेव कहते हैं भड्डुरी फिर बिना वर्षे नहीं जाएंगे ।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय ।
ऊबड़ खाबड़ बीज द्यो , अन्न घणेरो होय ॥
अर्थ- भाद्रमास में यदि शुक्ल षष्ठी को अनुराधा नक्षत्र हो तो ऊबड़ खाबड़ (उल्टा पुल्टा) डाला हुआ बीज से भी खूब धान होता है ।

रास पुराणी बाजरी, मेंढक फाल जंबार ।
इक्कड़ दुबकड़ मोठिया, कीड़ी नाल गरवार ॥
अर्थ- बाजरी हल की रास और पुणी की दूरी से , जवांर मेंढक के उछलन की दूरी तक , मोठ छिदा , और ग्वार को कीड़ी नाल की तरह अधिक अधिक बीजना चाहिए ।

चमकी भली न चैत में, बरस्यो भलो न जेठ ।
रूठ्यो भलो न राजवी, तूठ्यो भलो न सेठ ॥
अर्थ- चैत्र में बिजली चकना अच्छी नहीं है , ज्येष्ठ में ज्यादा बरसना अच्छी नहीं है उसी प्रकार राजा का रूठा और सेठ का खुश होना अच्छा नहीं है ।

## सूर्यचन्द्र लक्षण

सूरज कुण्डालो , चांद जळेरी । टूटै टीबा , भरै डैरी ॥
अर्थ- श्रेष्ठ वाहन जोड़े में सूर्य पर कुण्डल और चन्द्र चकोरी हो तो जल्दी भारी बारिश होती हैं ।

## संक्रान्त वास

रवि गुरु शाह, शशि घर धोबी, मंगल बसे कुम्हार ।
बुध शुक्र बागां बसे, कसाई शनि घर बार ।।
अर्थ- संक्रांति के दिन यदि रविवार, गुरुवार हो तो बणिये के घर, सोमवार हो तो धोबी के पर, मंगलवार हो तो कुम्हार के घर, बुधवार या शुक्रवार हो तो माली के घर तथा शनिवार हो तो कसाई के घर संक्रांति बैठती है ।
(सूर्य संक्रांति हर माह में होती हैं पर ज्यादातर मकर संक्रांति का विचार किया जाता हैं , संक्रांति का फल वारों व घरों के अनुसार शुभाशुभ होता हैं ।
पं. श्रीराधे जोशी)

# स्वर ज्योतिष

## नाड़ी प्रकार

इंगला पिंगळा सुखमणा, नाड़ी तीन विचार ।।
अर्थ- ईड़ा पिङ्गला सुषम्ना तीन प्रकार की नाड़ी होती हैं ।

## स्वर नाम स्थान

पिंगला दहिने अंग है, इड़ा सु बायें होय ।
सुषुमण इनके बीच है, जब स्वर चालें दोय ॥
अर्थ- पिङ्गला दाएं अंग से , ईड़ा बाएं अंग से , सुषम्ना इन दोनों के विच चलती हैं ।

## स्वर के स्वामी

जब स्वर चालै पिंगला, मध्य सूर्य तहं बास ।
इड़ा सु बायें अंग है, चन्द्र करत परकास ।।।
अर्थ- पिङ्गला दाएं स्वर में सूर्य का और ईड़ा बाएं स्वर में चन्द्र का वास है ।

## स्थिर स्वर

चन्द्रयोग में स्थिर पुनि जानो । थिर कारज सबही पहिचानो ।
अर्थ - चन्द्रस्वर स्थिर हैं इस मे स्थाई कर्म करने चाहिए विवाहादि ।

## स्थिर चन्द्रस्वर कार्य

बिवाह दान तीरथ जो कहे । बस्तर भूषण घर पग धरे ।।
बायें स्वर में यह सब कीजे । पोथी पुस्तक जो लिख लीजे ।।
अर्थ- विवाह , दान , तीर्थ स्नान , नवीन वस्त्र , सोना चांदी , घर बनना प्रवेश करना , जमीन खरीदना , ग्रन्थ लेखन यह सब बाएं स्थिर स्वर में करना चाहिए ।

योगाभ्यास अरु कीजै प्रीति । औषध नाड़ी कीजै मीत ।।
दीक्षा मन्त्र बोवे नाज । चन्द्रयोग थिर बैठे राज ॥
अर्थ- व्यायाम , प्रेम प्रसङ्ग , दवाई , गुरुदीक्षा , खेती बोना और राजभार सम्भालना यह सब चन्द्र के थिर स्वर में करना चाहिए ।

## चर सूर्यस्वर कार्य

विद्या पढ़ नई जो सांधे । मन्त्रसिद्धि औ ध्यान अराधै ।
बैरी भवन गवन जो कीजे । अरु काहुको ऋण जो दीजे ॥
ऋण काहू पे तू जो मांगे । विष औ भूत उतारन लागे ।।
चरनदास शुकदेव विचारी । ये चर कर्म भानु की नारी ।।
अर्थ-विद्य अध्ययन , मंत्रसिद्ध , बैरी के घर जाना , ऋण लेना-देना , जहर या भूत उतारना चरणदास जी कहते हैं यह सब चर कर्म सूर्य की नाड़ी चलते समय करना चाहिए ।

# स्वर ज्योतिष

### सुषम्ना स्वर नेष्ट कार्य

छिन बांए छिन दाहिने , सोई सुषुमण जानि।
ढील लगे के ना मिले , के कारज की हानि॥
अर्थ- कभी बाएं कभी दाएं एक ही मुहूर्त में बार बार चले तो वो सुषम्ना स्वर हैं इसमें किया काम धीरे से देरी से या फिर कार्य नष्ट हो जाता है।

### स्वर दिशाशूल

पूरब उत्तर मत चलौ , बाये स्वर परकाश |
हानि होय बहुरे नहीं , आवन की नहीं आश ॥
दहिने चलत न चालिये , दक्षिण पश्चिम जानि।
जो रे जाय बहुरे नही , औ होवे कछू हानि ॥
अर्थ- पूर्व उत्तर दिशा में बाएं स्वर से और दक्षिण पश्चिम दिशा में दाएं स्वर चल तो नहीं जाना चाहिए नहीं तो आने की आशा या हानि होवे।

### मृत्यु योग

आठ पहर दहिनों चलै बदले नहि जो पौन।
फिर तीन वर्ष काया रहे, जीव करें गौन ।।
अर्थ- आठ पहर (२४घण्टा) तक यदि दाहिना स्वर चले और स्वर बदल नहीं तो तीन वर्ष में मृत्यु हो होती हैं।

राति चले स्वर चन्द्र को , दिन मे सूरज बाल।
एक महीना यों चलै छठे महीना काल ।।
अर्थ- रात में चन्द्रस्वर चले और दिन में सूर्यस्वर चले तो एक मास तक ऐसे चले तो छ महीने में मृत्यु हो जाती हैं।

### अरोगी स्वर

बाई करवट सोइये जल बाएँ स्वर पीव।
दहिने स्वर भोजन करे तो सुख पावे जीव ।।
अर्थ- जो बाएं करवट करके सोता है , बाएं स्वर से ही जल पीता है और दाएं स्वर से जो भोजन करता है वह निरोगी रहता है।

### रोगी स्वर

बाएँ स्वर भोजन करै, दाहिने पीवं नीर।
दस दित भूला यो करै, पावै रोग सरीर ॥
अर्थ- यदि कोई गलती से बाएं स्वर से भोजन करे और दाएं स्वर से जलपान करें तो पक्ष भर में रोगी हो जाता हैं।

### विजय स्वर

युद्ध बाद रण जीते सोई | दहिने स्वर मे चाले कोई ॥।
अर्थ - युद्ध बाद - लड़ाई (आज के परिवेश जैसे न्यायालय आदि) कार्यों में जो दाएं स्वर के चलने से चलता है उसको कार्यसिद्धि प्राप्ति हैं।

## यमघण्ट योग

मघा बिशाषा आद्रा, मूल कृर्तिका जान ।
रोहिणि हस्त नक्षत्र ये, रवि से क्रम पहिचान ॥
यह यम घंट कुयोग है, याको उपजो रोग ।
महा सुकृत से जात है, समुझत पंडित लोग ॥

अर्थ- रविवार को मघा,सोमवार को विशाखा, मंगलवार को आर्द्रा, बुधवार को मूल, बृहस्पतिवार को कृतिका, शुक्रवार को रोहिणी, और शनिवार को हस्त नक्षत्र होने पर भी यमघंट कुयोग बनता है इसमें रोगी हो तो महापुण्य से प्राण बचते हैं (शुभकार्य और यात्रा में भी निषेध हैं।) ।

## असाध्य रोग

रविवासर शनिवार पुनि, भौमवार पहिचान ।
क्रूरवार पंडित कहत, ज्योतिष लिखित प्रमान ॥
हस्त मूल भरणी मघा, क्रूर नखत पहिचान ।
इनमे उपजे रोग तो कहत असाध्य प्रमान ॥

अर्थ- रवि शनि मंगल क्रूर वारों में और हस्त मूल भरणी मघा इन क्रूर नक्षत्रों में रोग लगे तो असाध्य हो जाता हैं ।

## रोगी दान पूजन

चित्रा स्वाती आद्रा, तीनो पूर्वा पुष्य ।
मूल पुनर्वसु कृत्तिका, अनुराधा असलिष्य ॥
श्रवण धनिष्ठा जेषठा, और विशाख मान ।
कष्ट साध्य गुनि नखत पति, पूजि कीजिये दान ॥

अर्थ- चित्रा स्वाती आद्रा ३पूर्वा पुष्य मूल पुनर्वसु कृत्तिका अनुराधा अश्लेषा श्रवण धनिष्ठा ज्येष्ठा और विशाखा नक्षत्र में लगे रोग कष्ट के लिए नक्षत्र स्वामी का पूजन व दान करना चाहिए (रोगानुसार अधिकाधिक दान पूजन करें)।

## रोगी मृत्युयोग

शूल वज्र अति गंड पुनि, व्यतीपात व्याघात ।
अरु विषकुम्भ वखानिये, क्रुर योग कर घात ॥
वार नखत पुनि योग जो, तीनहु होवें क्रूर ।
तौ रोगी जीवे नहीं, दवा होत सब धूर ॥

अर्थ- शूल वज्र अतिगण्ड व्यतिपात व्याघात विष्कुम्भ आदि क्रूर योग कहे गए है । यदि वार नक्षत्र और योग तीनों क्रूर हो तो रोगी का बचना मुश्किल होता हैं औषधि का भी लाभ नहीं होता हैं ।

आद्रा शतभिष अरु उरग, स्वति मूल भरनीय ।
तीनो पूर्वा रेवती , ज्येष्ठा और गनीय ॥
शनिवासर रविवर पुनि, भौमवार कहँ जान ।।
परिवा छठ चौथे गिनो और द्वादशी मान ॥
ये नक्षत्र तिथि वार में, परै रोग नर जोई ।
हरि हर विधि रक्षा करै, तऊ न जीवन होई ।।

अर्थ- आद्रा शतभिषा स्वाती मूल भरनी ३पूर्वा रेवन्ती ज्येष्ठा क्रूर नक्षत्र और प्रतिपदा ६,४,१२तिथि क्रूर हैं । इन नक्षत्रों तिथियों और वारों के योग में रोग लगे तो ब्रह्मा विष्णु शिव भी रक्षा करे फिर भी रोगी मृत्यु को प्राप्त होता हैं ।

## दोष प्रभाव

बार दोष रह सात दिन, तिथि दिन पन्द्रह जान।
नखत दोष रह मास इक, कहिगे बृद्ध प्रमान ॥

अर्थ- वार दोष ७ दिन , तिथिदोष १५ दिन ,और नक्षत्र दोष १ मास दोष रहता हैं । ऐसा बढेरों (बुजुर्गों) ने कहा है(यह रोगादि सभी विषयों में ग्राह्य हैं)।

## घातचन्द्र शान्ति

वशपात्र अरु वसन सित, स्वेत द्रव्य दधि जान ।
सित तंडुल दै विप्र कँह, घांत चन्द्रमा दान ।।

अर्थ- वशपात्र (श्वेत कमल वा वस्त्र से बांस टोकरी) श्वेतवस्त्र श्वेत द्रव्य दधि चावल शंख चान्दी आदि वस्तुओं का दान घात चन्द्र परिहार के लिए माना जाता हैं ।

[ रोगादि जिन प्रकरण में घातचन्द्र का विधान हैं उनके लिए अनुदान करें।]

## महादोष

पीपल काटे हल घडे, धन कन्या रो खाय ।
गोचर बोई खेती करे सो जडा मूल सूजाय ।।

अर्थ- पिप्पल काट हल बनाता है कन्या धन खाता है गौचर औरण बोता है - कुल को नष्ट करने वाला होता है । पीपल से पितृदोष कन्या द्रव्य से पुण्यक्षय गौचर से गौघात का दोष लगता है ।

॥ जय श्रीराम ॥

[ मूल ज्योतिष ग्रन्थोक्त स्वरचित ग्राम्यगिरा ज्योतिष दोहे ]

# ग्राम्यगिरा ज्योतिष संग्रहण

कुछ स्वरचित ज्योतिष दोहे दे रहे हैं भाग -२ में
५०दोहे होंगे- साथ मे उन दोहों का मूल स्रोत
प्राचीन ज्योतिष के श्लोक भी होंगे।

मानसी भक्ति द्वारा प्रकाशन

*Dulchasar Bikaner*

## स्वरचित ज्योतिष दोहा

।। ज्योतिष शास्त्र प्रवर्त्तक स्कन्द श्लोक संख्या ।।

फळत गणत सँगीता , जोषी जुग मैं तीन ।
अष्टदश मिल देवऋषि ,"हुकू" चारलाख में किन।।
अर्थ - फलित (होरा) , गणित (सिद्धान्त) , और संहिता ज्योतिष संसार में तीन प्रकार की है । ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक अठ्ठारह देव व ऋषियों ने मिल कर चार लाख श्लोकों में लिखा है हुक्म कहता हैं ।

ऋण विचार
ऋण मङ्गल में उत्तरणो , होरा लीजै साथ ।
कर्ज कबहूँ न लीजिए , भौम वृद्धि चन्द्र घात ।।
अर्थात - यदि ऋणी ऋण को मंगलवार को मङ्गल की होरा में चुकावे तो ऋण जल्दी उतरता है । मंगलवार वृद्धि योग औऱ घात चन्द्र में कर्जा कभी नहीं लेना चाहिए ।

ऋण देना लेना
देंणों न बुद्ध लेंणों तो शुक्र ।
कदहि न काटे शाह चक्र ।।
अर्थात- जो बुधवार को ऋण देता नहीं और शुक्रवार को ऋण देता है । वो शाहूकार कभी धन के लिए चक्कर नहीं लगता । यह नियम लेने वाले व देने वाले दोनों के लिए लाभकारी है ।

मंगल भरे । कद न मरे ।।
अर्थात- जो मंगलवार को कर्ज भरता है , वो कभी कर्ज से नहीं मरता है ।

चूल्ही चक्र
पुरो पुक्ख उतर अश्विन , अन्न धन आवे न फर्क ।
चूल्ही चक्र को थाप दो ,छोड़ो सोम भौम मन्दार्क ।
अर्थात - पु- ३पूर्वा , रो-रोहिणी ,३उत्तरा अश्विनी आदि नक्षत्र में करें तो अन्न धन का भण्डार भरा रहता हैं । चूल्हा स्थापना में सोम,मंगल, मन्दार्क- शनि रवि आदि वारों को छोड़ देना चाहिए ।।

युग का प्रभाव
ग्रही मंगता जोगी धन्वन्ता ।
जब्बर कळजुग देख्यो हुक्मन्ता ।।
अर्थात - कमाने वाले गृहस्थी मंगता बना गया है और मांगने वाले सन्यासी धनवान बने हैं । हुक्म कहता है गजब का कलयुग देखा हैं ।

### अङ्ग फल विचार

स्त्री बाम पुरुष दाम , फरके अंग सुखदाई ।
जासों उल्टो जो फरे , क्लेश हान दुखदाई ।।

अर्थात - स्त्री का बायां अंग और पुरूष दायां अंग फड़कना शुभ होता है इसके विपरीत फड़कने से क्लेश हानि होती हैं ।

### एकादशी हरि वासर

अनु आषाढां भादों श्रवण , काति रेवन्ती माहिं ।
हरियो वास ऊजळो , बारहाँ बरसाँ फल नसाहिं ।।

अर्थात - शुक्लपक्ष एकादशी व्रत के दिन आषाढ़ मास में द्वादशी को अनुराधा नक्षत्र हो भाद्रपद मास में द्वादशी को श्रवण नक्षत्र होवे और कार्तिक मास में द्वादशी को रेवती नक्षत्र होने पर हरि वासर होता है ऐसे योग में जो व्रत पारायण (भोजन) करता है तो बारह वर्ष की एकादशी व्रत का फल नष्ट होता है ।

### शेषनाग सिर विचार

भादों आसोज महीनो काति । शेष सिर अगुण सेति ।।
मिंगसर माघ पौष माहाँ । मस्तक शेष दक्षिण जहाँ ।।
अस्त रवि दिश नाग राजा । फागण चेत वैसाख साजा ।।
आषाढ़ सावण मास जेठा । उत्तर दिस अनन्त बैठा ।।

### फल

माँ बापू को शीश हरे , त्रस्त रोग करे पुठ ।
नासा पूँछ त्रीकुल से , राधे सास्तर न झूठ ।।

अर्थात- भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक- महीनों में शेषनाग का सिरअगुण (पूर्व) दिशां में रहता है। मार्गशीर्ष, पौष, माघ- मासों में दक्षिण दिशा में रहता है। फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में अस्तरवि (पश्चिम) दिशा में और ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण में उत्तर दिशा में रहता है।

फल - यदि शेषनाग के सिर पर खुदो तो माता-पिता की हानि हो और पीठ पर खोदे तो भय एवं रोग पीड़ा हो। पूँछ पर खुदवाये तो तीन गोत्र (नासा मतलब नानेरा सासरा त्रिकुल -खुद के वंश सहित ती गौत्र ) की हानि होवे और जो खाली जगह पर खुदवाये तो स्त्री, पुत्र, धन आदि का लाभ होवे राधे कहते शास्त्रों के वाक्य झूठ नहीं होते ।

### पुष्य महायोग

पुख्य सो नखतर नहीं , रवि गुरु सो बार ।
ग्रह गोचर उल्टा चले , तो भी उतरे पार ।।
अर्थ - पुष्य जैसे नक्षत्र नहीं और रविवार गुरुवार को संयोग हो तो कहना ही क्या ! ग्रह दोष गौचर दोष हो चन्द्र भी निर्बल हो तो भी इस योग में किया गया कार्य सिद्ध होता हैं ।

### कृषि कुयोग

बरसे चितर । हौ तीतर बितर ।।
अर्थ- यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा होती है तो संपूर्ण खेती नष्ट हो जाती है। इसलिए कहा जाता है कि चित्रा नक्षत्र की वर्षा ठीक नहीं होती।

### द्वारा चौगट मुहूर्त

स्वारो हस्त उतरा , मृश्र अश्विन पूरे ।
इण जोषी हुक्म हित , घर शाख द्वारे ।।
बारस तेरस पांच्यूं नोमी ,सात्युं आठ्यूँ लौय ।
सोम भौम शनि तजौ , पंचक त्रिपुष्कर खोय ।।
अर्थ- स्वा रो- स्वाति रोहिणी , हस्त , ३उत्तरा ,मृ श्र- मृगशीर्षा श्रवण , अश्वनी , पु रे- पुष्य रेवन्ती , इन नक्षत्रों में हुक्म कहता है ज्योतिषी में द्वारा शाखा (चौघट) बनाना हितकारी हैं। १२ , १३ , ५ , ९ , ७ , ८ यह तिथियां लेनी चाहिए । सोम मंगल शनि और पंचक त्रिपुष्कर योग त्यागना चाहिए ।

### अबूझ मुहूर्त

ऊज्जळ परवा चैत री , बिजय आखातीज ।
साढ़े तीन मोरत सिद्ध , गउ गोरधन लीज ।।
अर्थ- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा , अश्विन शुक्ल विजयदशमी , वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया , कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा गोक्रीड़ा गोवर्धन पूजा लीजिए । यह साढ़े तीन स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त हैं ।

### राशि स्वामी

सिंहराज है सुर के, शशि कर्क रो साथ ।
बुध कमि गुर धमी, वृषतु भृगुनाथ ।।
मकुं शनिश्चर रो राज है, मेख वृछ भौमराय ।
श्रीराधै प्रणत पाद, राशि सामी मनाय ।।
अर्थ- सिंह के स्वामी सूर्य, चन्द्र कर्क के, बुध (कमि) कन्या मिथुन राशि के, गुरु (धमी) धनु मीन के मीन के (भृगुनाथ) शुक्र (वृषत्) वृषभ तुला के, शनि (मकुं) मकर कुंभ के मेष वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल है श्रीराधे मै सभी राशि स्वामियों को प्रणाम करता हूँ।

### विवाह गृह खूंटी

सिंहसुर घर अग्नि चले, केहरि ब्याँव ईशान।
तिन तिन पद को चालिए, मिले खात प्रमान।।
अर्थ- घर का पाया सिंह राशि से प्रारम्भ करके तीन राशि (सिंह५, कन्या ६, तुला७) के सूर्य में अग्निखात, ८, ९, १०, में ईशान ऐसे ही वायव्य में तीन, फिर नैऋत्य में तीन समझे। ऐसे ही विवाह में केहरि (सिंह) से सिंह कन्या तुला तीन राशि ईशान, तीन वायव्य, तीन नैऋत, तीन अग्नि समझे।

### विवाह विशेष

देव दनुज गुरु लग्न समाई। ब्याँह बिष जिमि पय मिलाई।।
अर्थ- देवगुरु बृहस्पति दैत्यगुरु शुक्र की विवाह लग्न में युति हो तो वह लग्न विष मिले दूध की तरह त्याज्य हैं।

### कर्त्तरी योग

दो बाहारा पाप ग्रह, लग्न वास हो बीच।
विष ब्याह प्राण को, कर्तरी योग बीच।
अर्थ विवाह लग्न के आगे दूसरे भाव में, पीछे द्वादश भाव में पाप ग्रह हो ऐसी स्थिति में कर्त्तरी योग बनता हैं जो विष के समान विवाह में प्राण नास करें।

### विवाह वर्षायु

वर बिष बधु समायु, कीजै पाणि ग्रहण।
राधे विरुद्ध जै करै, मुनि नारद कहे मरण।।
अर्थ- विवाह में जन्म से वर की विषम और वधु की सम वर्षो में आयु हो तो विवाह करे। राधे कहता हैं जो इसके विपरीत करता हैं तो वर वधु का नाश होता हैं ऐसा नारद मुनि ने कहा है।

### गर्भाधान

चार वासर छाड़ि के, बीजे गरबा धाण।
विषम वार सुत जणे, सम कुंवरी जाण।।
अर्थ- ऋतुकाल के चार दिन छोड़कर गर्भधान करना चाहिए। विषम दिनो में गर्भधारण से पुत्र की और सम दिनों कन्या की उतपत्ति होवे। (गणना रजोदर्शन दिन से करनी चाहिए)

### गर्भ व जन्म विचार

धौळो काळो अन्धो सुदे, सीजाँ प्रदोष काळ।
दिन रात सब उल्टा चले, गर्भ जन्म पहचाण।।
अर्थ- जो गर्भ शुक्ल पक्ष में पड़े {गर्भधारण} हो वो कृष्ण पक्ष में और कृष्ण का शुक्ल में, सन्ध्या का सन्ध्या में, दिन का रात में रात का दिन में जन्म लेता है यह गर्भ जन्म पहचान है।

### पाया

सुमेरु षष्टी एकादश, कंचन पाया जाण ।
बीजो पंचम नौरमे, रजत है प्रमाण ।।
चतुष् अष्ट द्वादश लौह, तीन सातदस ताम ।
श्रीराधे लग्न चन्दूगन, पाया परख नाम ।।

अर्थ- सुमेरु(प्रथम १) ६,११ में सोना , बीजो(१) ५,९ में चान्दी , ४,८,१२ में लौह , ३,७,१० में तम्बा का पाया होता हैं । श्रीराधे कहता है - लग्न से चन्द्र तक गिनने पर जन्म पाया प्राप्त हो ।

### अभिजीत नक्षत्र

उत्तर षाह अन्त म्हे , श्रुति अगर को चरण ।
राधे जाणे जोतसी ,अभिजीत नखत वरण ।।

अर्थ- उत्तराषाढ़ा का अंतिम श्रुति (श्रवण) का प्रथम राधे कहता है ज्योतिष के जानकार अभिजीत नक्षत्र का वर्णन करते हैं ।

### अधिकमास

बतीस मास सोलह दिवस, घटिका चतुर बिताय ।
हुक्म हरि हिरणाकुश हत्यौ, सौ अधिक मास कहाय।।

अर्थ- ३२ महा १६ दिन और ४ घटी बीतने पर जो बनता है उसको अधिकमास कहते हैं । हुक्म कहता हैं - भगवान हरि ने उसे हिरण्यकश्यपु संहार करने के लिए बनाया था ।

दोऊ मावस रवि संक्रमण नाहि । अधिक मास कहिय ताहि ।।

अर्थ- दो अमावस्या की बीच सूर्य संक्रांति ना तो उसे अधिकमास कहते हैं ।

### क्षयमास

दो आमा के बीच में, दो संक्रमण होय ।
जोषी मास क्षय बणे, जानत पण्डित सोय ।।

अर्थ- यदि दो अमावस्या के बीच मे दो सूर्य संक्रांति होवे तो ज्योतिष में क्षयमास बनता हैं । ऐसा ज्योतिषज्ञ पण्डित जानते है ।

### जन्म राशि निषेध

पंथ चलण जुद्ध करण, परणीजे और क्षौर ।
उद्भव इन्दु को त्यागणों, भवन बास की ठौर ।।

अर्थ- यात्रा करना, युद्ध में जाना, विवाह, क्षौरकर्म तथा भवन वास (गृह प्रवेश) ये पांच कर्मो में जन्म का चंद्रमा त्यागना चाहिए वर्जित हैं ।

### जार योग

धनेश तीजे बसे, बसे तीजो धनेश।
पुरुष परनार संग रहे, स्त्री सातों भृगेश ।।

अर्थ- यदि पुरूष जन्मांग में धनेश तृतीय भाव में हो तो कामी और तृतीयेश धनभाव में तो पर स्त्रीगामी होवे। स्त्री की कुंडली में सप्तम भाव में यदि शुक्र नीच अस्त शत्रुगत हो तो ब्यभिचारी योग है।

### तन्त्र अभिचार

चार दश प्रश्न लग्न हूँ, केतु बैठा होय।
भौम सिर पैठ्यो देखे, तन्तर करायो कोय ।।

अर्थ-यदि चतुर्थ दशम या प्रश्न लग्न स्थान में केतु हो और सिर (लग्न) में मंगल की पैठ्यो (बैठा) या लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो तन्त्र (अभिचार) जानना चाहिए।

### ग्रहण व चण्डल योग

सोमार्क युति राहु कै, कहे गरह्ण जोग।
बीफे बैठ राहु संग, चण्डाल कहे कुजोग ।।

अर्थ- सोम अर्क सूर्य की राहु युति होने से ग्रहण योग बने एवं बीफे (गुरु) राहु संग में चण्डाल योग बनता है दोनों कुयोग कहे गए।

### पञ्चपुत्र

रविसुत होइ कुम्भ के, अथवा सुरगुरु एक।
पञ्च सुत ताके योग हैं, पंचम भाव विवेक ।।

अर्थ- पञ्चमभाव में यदि शनि कुम्भराशि का रहे तो पाँच पुत्र होते हैं। पञ्चम भाव में एकाकी बृहस्पति यदि हो तो पाँच पुत्र होते हैं।

### गौचर चन्द्र

चतुर चन्द्र विरुध बरे, अष्टायू नाश।
बारह बिधू ऋणी भयो, वाकी वसे सुवास ।।

अर्थ-गौचर में चौथा चन्द्रमा होने से विरोध क्लेश, अष्टम में आयु रोग मृत्यु दुर्घटना, द्वादश में अधिक खर्चा ऋण आदि करता है अतः इन स्थानों में चन्द्र के रहते किसी प्रकार मुहूर्त या विशिष्ट कार्य न करें।

### ग्रहदशा

राशि से नखत अति , ग्रह दशा विचार।
सुभ असुभ ग्रह करै , नखतर खाण्डा धार ।।

अर्थ- किसी पाप ग्रह की दशा राशि से अधिक नक्षत्र से विचार करनी चाहिए। राशि से ग्रह शुभाशुभ मिश्रित फल देता हैं पर नक्षत्र दशा तलवार की धार के समान हानिकारक होती हैं।

### शनि दशा

द्वादश स्वदो साढ़े साती , चार आठ को ढायो ।
जन्म राशि से चालिए , मिले शनि दशा सायो ।।
अर्थ- १२वीं, स्व- स्वयं राशि, दूसरी राशि पर शनि रहे तो साढ़े साती दशा और , ४, ८ पर हो तो ढाया शनि दशा जाने जन्म राशि से चलकर शनि संचार तक गिनने से दशा ज्ञात होवे ।

### शनि पाद विमर्श

स्वनख संख्य शनि नख अंक , जोड़ भाग दे चार ।
एक स्वर्ण दो लौह चले , तीन ताम रजत शून्यकार ।।
अर्थ- जिस नक्षत्र पर शनि हो उसकी संख्या में अपने जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़कर चार ४ का भाग देवें । १ शेष रहते सोने का, २ शेष रहते लोहे का, ३ शेष रहते ताम्बे का तथा शून्य शेष रहे तो चांदी पाद में शनि का चार जानना चाहिए ।

### शनि शान्ति

शनि सन्ताप व्यापै नहिं , नाम लीजै तीन ।
गाधि कौशिक अरु महर्षि , पिप्पलाद प्रवीण ।।
अर्थ- शनि जन्य कष्ट उसको नहीं होता जो गाधि कौशिक और महर्षि पिप्पलाद का नित्य नाम स्मरण करता हैं ।

### ग्रहशान्ति दान

पतंग पान और श्रीखण्ड सोम ।
शशि सुत जाप भौजन भौम ।।
शिवगुरु अर्चन शुक्र परिधान ।
च्छायासुत सौरि का सुनिय दान ।।
तैलनाह्न राधे विप्र-माण ।
ग्रहशान्ति हो राम-बाण ।।
अर्थ- सूर्य पान (ताम्बुल)दान से, चंद्रमा चंदन दान से, मंगल लाल द्रव्यों के भोजन दान से, बुध शास्त्रोक्त मंत्र जप से, गुरु शिवजी के अर्चन से शुक्र श्वेतवस्त्र दान से अब छाया नन्दन शनि का दान सुनिए । राधे कहता हैं- तेलस्नान और ब्राह्मण सन्मान से शनि , यह ग्रहशान्ति का रामबाण प्रोयोग हैं ।

### महाशान्ति

जिण मरणो एकण बार , सौ काशी जाय ।
कोटि काळ ग्रह शान्त हो , नित पूजे गाए ।।
अर्थ- जिसे इस संसार में एक ही बार मरना हो वह काशी जाए । जिसे करोड़ो काल ग्रहों को शान्त करना हो वह वैदलक्षणा गौमाता की सेवा करें ।

## हवनाग्निवास

**तिथ एकण योग कर , अभीष्ट वारदो जोड़ ।**
**विभाजन हो चार सों ,रहें अग्निवास की ठोड़ ।।**
**एक आकाश दो पताळ म्हे, होम कर्यां हो हाण ।**
**वासो शेष शून्य त्री धरित्री , जातवेद कल्याण ।।**

**अर्थ-** तिथि में १ जोड़कर, उसमें अभीष्ट वार संख्या जोड़ें तथा ४ का भाग देवें, शेष अंक में अग्निवास की जगह मिले । शेष १ में आकाश (स्वर्ग), शेष २ पाताल में हो जिसमें यज्ञ करने से हानि हो , शेष ० या ३ में अग्निवास पृथ्वी वास करे , उस दिन होम करने अग्निदेव कल्याण व सफलता प्राप्त होती है।

### ।। अग्निवास चक्र ।।

| तिथि | | वार | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्ल | कृष्ण | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
| 1 | 2 | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | |
| 2 | 3 | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | |
| 3 | 4 | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी |
| 4 | 5 | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी |
| 5 | 6 | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | |
| 6 | 7 | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | |
| 7 | 8 | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी |
| 8 | 9 | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी |
| 9 | 10 | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | |
| 10 | 11 | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | |
| 11 | 12 | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी |
| 12 | 13 | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी |
| 13 | 14 | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | |
| 14 | 30 | पृथ्वी | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | |
| 15 | 1 | | | पृथ्वी | पृथ्वी | | | पृथ्वी |

## बडी बात

ब्राह्मण अग्नि डाभपता, तुलछाँ मन्तर गान।
"राधै" निरमल रहे सदा, गंगाबारी समान ।।
भुदे भोजन प्रेत का, अनल होई श्मशान ।
कुशा पिण्ड मन्त्र शुद्र सों, सदा अपावन जान ।।

अर्थ- ब्राह्मण, अग्नि, कुशा, तुलसी और मन्त्र राधै कहता है यह हमेशा पवित्र होते है यह पांचो गंगा जल के समान पूजनीय एवं पवित्र माने गए हैं ( क्योंकि गङ्गा जी भगवान के श्रीचरणों निकलने के बाद भी भगवान के लिए पूजनीय हैं भगवान गङ्गा जी में पूजा स्नान आचमन भी करते हैं)। इनको बार बार क्रियमाण करने पर यह निर्माल्य नहीं होते (यह अशुद्ध नहीं होते हैं)। (यह अपवित्र कब होते हैं) पर ब्राह्मण प्रेतभोजन करने से, श्मशान में जान पर अग्नि, पिण्ड पर चढ़ने पर कुशा और अनाधिकृत के मुख से वेद मन्त्र सदा अपवित्र होते हैं ।।

## अटल सत्य

काळ चौरासी चालसी , ऋण रोग काट्यां कटे ।
"हुक्म" हरि साँची कहि , कर्यो कर्म भोग्याँ घटे ।।

अर्थ- काल जीव के पीछे पीछे ८४ लाख योनियों में चलता है , इस जन्म का हो अथवा जन्मान्तरो का हो ऋण रोग को काटने से ही कटते है । हुक्म कहता है - भगवान श्रीहरि ने सच कहा कि किया हुआ कर्म भोगने से भीगने से घटते है दूसरा कोई उपाय नहीं है ।

हुक्म काळ ग्रह बणे , परा लब्ध फळादेश ।
कर्मविपका जाणिए , प्रगट सुख दुख भेष ।।

अर्थ- अन्तिम बात हुक्म कहता हैं प्रारब्ध ही फलादेश है काल ही ग्रह बनता हैं । जन्मान्तरो के किए कर्म ही सुख दुःख के रूप में आते हैं ऐसा कोई ज्ञानी ही जानता है ।

राखे ज्युं-त्युं रहा , जहाँ निरमै त्या जावा ।
हुक्म तणा वस हुवै, जिको सिरि गिरा जणावा ।।
अर्थात - हे परमात्मा । आप हम प्राणियो को जिस अवस्था मे रखना चाहते है उसी में हम रहते है। जहाँ जिस योनी मे हमे पटक्ते हैं, उसमे हम रहते हैं। आपके श्री मुख से जो आज्ञा होती है हम उन्ही योनियो की भाषाओ मे बोलते हैं।

धारै तो साहब धणी, करै बिलम्ब न काय ।
मार उपावै मेदनी, महोरत एक्ण माय ।।
अर्थात - यदि भगवान करना चाहे तो एक क्षण के मुहूर्त में सृष्टि का प्रलय करके पुनः निर्माण करदे। वह परम समर्थ सबको धारण करने वाले धणी है।

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ।
अंगिरा च मनोत्साह विप्रवाक्य जनार्दनः ।।
भाग्यं फलति सर्वत्र न च विद्या न च पौरूषम् ।
समुद्रमन्थनं प्राप्य, विष्णुर्ललक्ष्मीहरेर्विषम् ।।
देवदानवगंधर्वाः यक्षराक्षस किन्नराः ।
पीड्यन्ते ग्रहपीड़ाभिः किं पुनर्भुवि मानवाः ।।
आयुः कर्म च वित्तं विद्या निधनमेव च ।
पंचेत्यान्नपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंघ्रियुगं स्मरामि ।।
अर्थ : वही लग्न (मुहूर्त ) शुभ होता है, वही दिन मंगलकारी होता है, उसी लग्नमें तारे, चन्द्र, विद्या और देवताका बल होता है जिस समय हम लक्ष्मीपति श्रीविष्णुका स्मरण करते हैं।

•••

प्रथम भाग सम्पूर्ण

•••

!! हरि शरणम् !!
पं . श्रीराधे जोशी
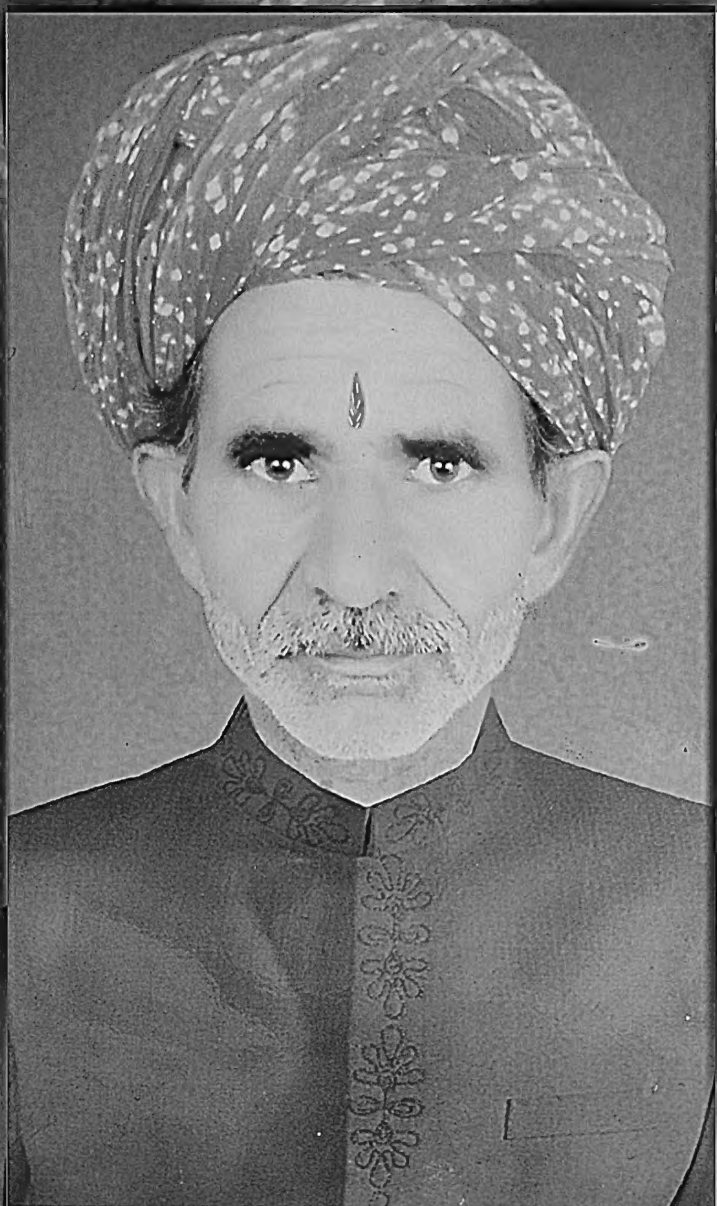
ज्योतिर्विद वैकुण्ठवासी पं . श्रीहजारीराम जी जोशी

*राजस्थानी ज्योतिष*

**फळत गणत सँगीता , जोषी जुग में तीन ।**
**अष्टदश मिल देवऋषि ,"हुकू" चारलाख में कीन।।**

अर्थ - फलित (होरा) , गणित (सिद्धान्त) , और संहिता ज्योतिष संसार में तीन प्रकार की है । ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक अठ्ठारह देव व ऋषियों ने मिल कर हुक्म कहता है चार लाख श्लोकों में लिखा है ।

# परम् पूज्य दादाजी की

# पुण्यस्मृति में -

# आप सभी के कर

# कमलों में समर्पित हैं ।

**पं. श्रीराधे जोशी (हुक्म) बीकानेर राज.**

# दोहा ज्योतिष

# राजस्थनी ज्योतिष

# भाग. १

# भाग. २